




# दीने इस्लाम की खूबियाँ

## आप इस किताब में पढ़ सकेगें

- अल्लाह पाक की सबसे बड़ी नेमत कौन सी है ?
- दीन और इस्लाम का माना क्या है ?
- दुरूदे पाक की अनोखी फ़ज़ीलत
- हमारा दीन और हमारी हालत
- दीने इस्लाम की क्या खूबियाँ हैं ?
- मुसलमानों से दर्दमंदाना अपील
- कौन सा दीन मक़बूल है ?
- इस्लाम क्यों आया ?
- रूहानी ईलाज

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान
अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

الحمد للہ اللطیف و الصلوۃ و السلام علی رسولہ الشفیق اما بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

وعلی الک و اصحابک یا حبیب اللہ الصلوۃ و السلام علیک یا رسول اللہ

दीने इस्लाम की अहमियत, ज़रुरत और अक़ली व नक़ली ख़ूबियों और रूहानी ईलाज पर मुश्तमिल फ़िक्र अंगेज़ किताब बनाम

# दीने इस्लाम की खूबियाँ

## आप इस किताब में पढ़ सकेगें

दुरूदे पाक की अनोखी फ़ज़ीलत
अल्लाह पाक की सबसे बड़ी नेमत कौन सी है ?
हमारा दीन और हमारी हालत
कौन सा दीन मक़बूल है ?
दीन और इस्लाम का माना क्या है ?
इस्लाम क्यों आया ?
दीने इस्लाम की क्या खूबियाँ हैं ?
मुसलमानों से दर्दमंदाना अपील
रूहानी ईलाज

**मुसन्निफ़**

**मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफीक़ खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी**

**मकतबा दरुस्सुन्ना आगरा**

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْف وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الشَّفِيْق اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

मकतबा दारुससुन्ना आगरा की जानिब से घर घर दीन की तालीम पहुँचाने, दीनी जानकारी को आम करने और दीने इस्लाम की अहमियत, ज़रूरत और खूबियों को आसान अंदाज़ में पेश करने की पहली कोशिश

बनाम

## दीन सीखो और इनाम पाओ

# दीने इस्लाम की खूबियाँ

**अल्लाह पाक हमें अपने दीन को सीखने और उस पर अमल करने की तौफीक़ अता फरमाये**

**जुमादल ऊला 1447 हिजरी** **NOV 2025**

**पेज : 80** **MRP: 80**

**CONTACT: +91 6395069872 / 8808693818**

**नोट :** मैं अपने तमाम इस किताब को पढ़ने वालों से इल्तिजा करता हुँ कि इस किताब की कम्पोजिंग से लेकर चेक करने तक के सारे मराहिल गहरी नज़र से किये गये हैं लेकिन फिर भी गलती का इम्कान मौजूद है। लिहाज़ा जो भी इस किताब में कोई गलती पाये वह ज़रूर इस मेल आई डी पर मेल कर के बताये ताकि अगले एडीशन में उस को दुरुस्त किया जा सके।

EMAIL: SHAFIQMADANI26@GMAIL.COM

**दुआए खैर का तालिब**

**अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफीक़ खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी**

**तस्हीह :मुहम्मद उबैद रज़ा दर्जा सादिसा जामिया आगरा**



# आओ दुनिया को बताएं खूबियाँ इस्लाम की

आओ दुनिया को बताएं खूबियाँ इस्लाम की
ज़िंदगी भर काम आएं खूबियाँ इस्लाम की

अदल है, इन्साफ़ है, उल्फ़त, रहम की बात है
किस तरह कोई मिटाए खूबियाँ इस्लाम की

दूर से ही रुख से तेरे सुन्नतें छलका करें
पैरहन में मुस्कराए खूबियाँ इस्लाम की

कुफ्र की ज़ुल्मत में डूबा जिस जगह इंसान हो
उस जगह फिर जगमगाए खूबियाँ इस्लाम की

नूर बन कर दिल में उतरेगी उसी की बात फिर
जो कोई अपनाते जाए खूबियाँ इस्लाम की

क़ौम की तक़दीर बन जाते हैं वो माँ बाप जो
अपने बच्चों को सिखाएं खूबियाँ इस्लाम की

येह फ़रीज़ा है हमारा, दीन का फ़रमान भी
हर कदम अपनाते जाएं खूबियाँ इस्लाम की

इस तरह बतलाओ बेख़ुद, अपने तो अपने मगर
ग़ैर भी फिर जान जाएं खूबियाँ इस्लाम की

**वसीम बेखुद माण्डलवी राजस्थान**



फेहरिस्त

# पहले इसे पढ़ लीजिए

**ऐ आशिक़ाने रसूल!**1447हिजरी बमुताबिक 2025 ईसवी में होने वाला हमारे नबीﷺ का मीलाद आम मीलाद नहीं था बल्कि येह 1500 साला मीलाद था यानी इस साल हमारे नबीﷺ को दुनिया में पैदा हुए 1500 साल हो गए, इसी लिए तमाम आशिक़ाने रसूल ने अपने नबी ﷺका मीलाद और जलूसे मीलाद को बड़े एहतिमाम के साथ और बड़े अच्छे अंदाज़ में मनाने की कोशिश की, यहां तक कि कई इलाक़ों में जुलूसे मीलाद के वक़्त बारिश हो रही थी लेकिन फिर भी आशिक़ाने रसूल ने बारिश में भीगते हुए जुलूसे मीलाद में शिरकत की और अपने नबीﷺ की बारगाह में ख़िराजे तहसीन पेश कर के अब्दी और सरमदी बरकतों को अपने दामन में समेटने की कोशिश की अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ है कि हर आशिक़े रसूल को दुनिया व आख़िरत में नबीﷺ की बरकतें, रहमतें, इनायतें नसीब फ़रमाए और तमाम आशिक़ाने रसूल की ख़ैर फ़रमाए। आमीन

या रसूलल्लाह तेरे चाहने वालों की ख़ैर
सब ग़ुलामों का भला हो सब करें तैबा की सैर

## नबीﷺ का आशिक़ कैसा होता है?

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** नबीﷺ का येह मीलाद हमें सिर्फ साल में एक बार नहीं बल्कि सारी ज़िंदगी मनाना है और बिलख़ुसूस 1447 हिजरी में पूरे साल मीलाद मनाना है। अपने अंदर अपने नबीﷺ का इश्क़ बढ़ाना है। नबीﷺ की सीरत से अपने किरदार को जगमगाना है। और दुनिया को बता देना है कि नबीﷺ का आशिक़ ऐसा होता है। नबीﷺ का आशिक़ कैसा होता है ?

नबीﷺ का आशिक़ नमाज़ी होता है। नबीﷺ का आशिक़ सुन्नतों पर अमल करने वाला होता है। नबीﷺ का आशिक़ अपने नबीﷺ का हर वक़्त

ज़िक्र करने वाला होता है। नबीﷺ का आशिक़ झूट नहीं बोलता। नबीﷺ का आशिक़ किसी को धोका नहीं देता। नबीﷺ का आशिक़ ख़ुश अख्लाक़ और बा किरदार होता है। नबीﷺ का आशिक़ सच्चा मुस्लमान होता है। नबीﷺ का आशिक़ नबीﷺ की सुन्नतों की चलती फिरती तस्वीर होता है । नबीﷺ का आशिक़ दुनिया में कहीं भी रहे मगर उस का दिल मदीने में होता है ।

जानो दिल होशो खिरद सब तो मदीने पहुंचे
तुम नहीं चलते रज़ा सारा तो सामान गया

लिहाज़ा नीयत कीजिए कि इस साल के आख़िर आख़िर तक हम अपने नबीﷺ की सीरत को ज़रूर पढ़ लेंगे । अलहम्दु लिल्लाह दीन की ज़रूरी बातें, नबीﷺकी सीरत को आम करने, हर मुस्लमान तक नबीﷺ की सीरत को आसान अंदाज़ में पहुंचाने की कोशिश में आपका **'मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा'** दिन रात लगा हुआ है। और इसी की एक कड़ी येह किताब है

## दीन सीखो और इनाम पाओ

आज कल देखा जा रहा है कि दीनी किताबों को पढ़ने का शौक़ो ज़ौक़ बिल्कुल ख़त्म होता जा रहा है जिसकी वजह से एक मुस्लमान को अपने दीन की ज़रूरी जानकारी नहीं हो पा रही और इस का बुरा नतीजा और बुरा असर येह हुआ कि मुस्लमानों के दिलों से अपने दीन, ईमान, क़ुरआन, अल्लाह और रसूल की अज़मत, वुक़अत, रिफ़अत ख़त्म होती जा रही है। यहां तक कि ऐसे भी हालात होते जा रहे हैं कि उनको अपने नबी का नाम तक मालूम नहीं और जब हमारा येह हाल है तो हमारी आने वाली नस्लों का क्या हाल होगा ? बस अल्लाह पाक हमारे हाले ज़ार पर रहम फ़रमाए ।

## मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा और दीन की ख़िदमत

हमारे **'मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा'** की टीम ने इस पर काफ़ी ग़ौरो फ़िक्र किया कि मुस्लमानों को अपने दीन की ज़रूरी जानकारी कैसे दी जाये? और मुस्लमानों के अंदर नबीﷺ की सीरत को पढ़ने का शौक़ो ज़ौक़ कैसे पैदा किया जाये ? लिहाज़ा काफ़ी ग़ौरो फ़िक्र के बाद टीम की मुशावरत से येह तै हुआ कि:

(1)**---** किताबों को आसान अंदाज़ में और उर्दू में कम और हिन्दी में ज़्यादा छापी जाएं।

(2)**---** किताबों को बहुत ज़्यादा मोटी नहीं बल्कि 100 से 150 पेज की रखी जाये।

(3)**---** किताबों को इस अंदाज़ से लिखा जाये कि उस में क़ुरआन और हदीस के साथ साथ अक़्ली दलीलें, लोजिक और हिकमतें भी बयान की जाएं ताकि पढ़ने वाले को किताब से दिलचस्पी हो।

(4)**---** किताबों की ख़रीदारी पर कुछ ना कुछ इनाम रखा जाये जिसकी वजह से किताबों को ख़रीदने में लोग पीछे ना रहें बल्कि इनाम को पाने की लगन में दीनी किताबें खरीदें और पढ़ें और अपने ईमान को मज़बूत करें।

(5)**---** येह ऑफ़र हर दो महीने में निकाला जाये और हालात और मुआमलात के पेशे नज़र इन किताबों में दीन की ज़रूरी जानकारी हो।

## लकी ड्रा अक्टूबर 2025

अल्लाह पाक के करम से मजलिस की मीटिंग के बाद इस पर काम शुरू हुआ और देखते ही देखते 10 Sep 2025 को **लकी ड्रॉ अक्टूबर**

**2025** के नाम से पहला इनामी क़दम उठाया गया जिसमें येह ऐलान किया गया कि

तक़रीबन 1,000 रुपये की किताबें सिर्फ 600 रुपये में दी जा रही हैं और इस तरह के 600 Packet बनाए गए हैं और 600 Packet को ख़रीदने वालों के नाम की पर्ची बनाई जाएगी फिर 1 Oct 2025 को उनके नाम की पर्ची की क़ुरआ अंदाज़ी की जाएगी यानी Lucky Draw निकाला जाएगा और जिसका नाम निकलेगा उस को मदीने का टिकट यानी उमरे का Package दिया जाएगा और जो उमरे पर नहीं जाना चाहता उसे 80,000 रुपये दिए जाऐंगे।

इस ऐलान को सुनते ही एक धूम पड़ गई और 30 Sep 2025 तक इन किताबों की ख़रीदारी का सिल्सिला जारी रहा। और 1 Oct 2025 को महफ़िले मदीना मुन्अक़िद की गई जिसमें इस लकी ड्रॉ का मक़सद, किताबों का तआरुफ़, दीन की ख़िदमत करने के उन्वान से बयान हुआ और ख़रीदने वालों के नाम का क़ुरआ डाला गया यानी Lucky Draw किया गया और जिसका नाम निकला उस को मदीने का टिकट दिया गया इस Lucky Draw में जिसका नाम निकला उन का नाम पता येह है

**अमान बिन शाने इलाही आगरा**

अल्लाह पाक के करम से इस काविश की काफ़ी पज़ीराई हुई और इस्लामी भाईयों की जानिब से काफ़ी पैग़ामात आए कि इस तरह का दूसरा सिल्सिला कब शुरू होगा ?

# दीन सीखो और इनाम पाओ का तआरुफ़

अब इस सिल्सिले को मज़ीद आगे बढ़ाते हुए हमारे **'मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा'** की टीम ने **दीन सीखो और इनाम पाओ** इनामी ऑफ़र के नाम से येह ऐलान किया है कि:

नबीﷺ के इश्क़ से लबरेज़ किताब **'आँखों का तारा नामे मुहम्मद'** का हदिया 170 रुपये और **'दीने इस्लाम की खूबियाँ'** का हदिया 80 रुपये, यूं दोनों किताबों का कुल हदिया 250 रुपये हुए लेकिन ऑफ़र में आगरा वालों के लिए सिर्फ 100 रुपये में और आगरा के इलावा दीगर इलाक़े वालों के लिए 115 रुपये में दी जाएंगी। और इस के ख़रीदने वालों को **19 इनाम** दिए जाऐंगे यानी पहली पर्ची वाले को **मदीने का टिकट** और बाक़ी 18 पर्ची वालों को मक्का शरीफ़ और मदीना शरीफ़ नीज़ बग़दाद शरीफ़, अजमेर शरीफ़ और बरेली शरीफ़ के **तबर्रुकात के साथ दूसरे तोहफ़े** पेश किए जाऐंगे

# हमारा साथ दें

अब इस में आप से अर्ज़ है कि इस को ख़ुद भी खरीदें और दूसरों को ख़रीदने का ज़ेहन बनाएं। नीज़ अपने मरहूमीन के इसाले सवाब के लिए, अपने दीन की तालीम और नबीﷺ की सीरत को आम करने और घर घर पहुंचाने के लिए 12 किताबें, 25 किताबें, 50 किताबें, 100 किताबें अपनी हैसियत के मुताबिक़ तक़सीम करवायें और इस नेक काम में हमारा साथ देकर सवाब कमाएं। अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ है कि अल्लाह पाक हमें दीन की ख़ूब ख़ूब ख़िदमत करते रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। तमाम मुस्लमानों की ख़ैर फ़रमाए। हरमैन शरीफ़ैन की हाज़िरी से मुशर्रफ़ फ़रमाए। ईमान की ज़िंदगी

और ईमान पर ख़ातिमा नसीब फ़रमाए । हमारे दीन, ईमान, अक़ाइद की हिफ़ाज़त फ़रमाए। अमीन

**कहते रहते हैं दुआ के वास्ते बंदे तेरे**
**कर दे पूरी आरज़ू हर बेकसो मजबूर की**

**मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा**

**मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफीक़ खान अत्तारी मदनी फतहेपुरी की किताबों को डाउन लोड करने का QR कोड**



# मुसन्निफ़ का तआरुफ़

## नाम और निस्बत

नाम मुहम्मद शफीक़ खान,वालिद का नाम मुहम्मद शरीफ खान है, सिल्सिला क़ादरिया रज़विया अ़त्तारिया में शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दा'वते इस्लामी, हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी रज़वी से 2004 ईसवी में बैअ़त होने की वजह से अपने नाम के साथ अ़त्तारी लिखते है, आपकी विलादत क़स्बा ललौली जिला फतेहपुर हंसवा, सूबा यू पी, हिंद में हुई, आप की तारीखे पैदाइश 10 जून 1986 ईसवी है।

## दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म

हज़रत ने इब्तिदाअन हिंदी इंग्लिश की ता'लीम हासिल करके सन 2000 ईस्वी में ऐ. सी. का काम सीखने और करने के लिये बम्बई चले गये थे और वहां पर 4 साल क़ियाम किया फिर 2004 ईस्वी में अपने वतन लौटे और वतन में ही उन्हें दा'वते इस्लामी का दीनी माहौ़ल मिला, दा'वते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बाद मुख्तलिफ कोर्सेज़ किये और 2006 ईस्वी में अपने ही इलाके के दारुल उ़लूम बनाम जामिया अ़रबिया गुलशने मा'सूम कस्बा ललौली में क़ारी इक़बाल अहमद अ़त्तारी से क़ुरआ़ने पाक नाज़िरा और ह़ज़रत मौलाना अ़तीक़ुर्रह़मान मिस्बाही से दर्से निज़ामी के दरजए ऊला और कुछ दरजाए सानिया की किताबें पढ़ीं, इसके बाद मज़ीद ता'लीम हासिल करने के लिये चिरैयाकोट जिला मऊ तशरीफ ले गये और वहां दरजए सानिया मुकम्मल करने के बाद अहले सुन्नत के अज़ीम इ़ल्मी इदारे अल जामिअ़तुल अशरफिया मुबारकपुर आ'ज़मगढ़ में मतलूबा दरजए सालिसा का टेस्ट दिया और अल्लाह पाक के फ़ज़्ल से कामयाब होने के बाद दरजए

सालिसा की तालीम वहीं हासिल की, फिर दरजए राबिआ दारुल उ़लूम ग़ौसिया (जो जिला आ'ज़मगढ़ के गाँव सरय्या में वाक़ेअ़ है) में मुकम्मल की, फिर उसके बाद दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना, फैज़ाने अ़त्तार नेपालगंज,नेपाल में दाखिला लिया और दरजए खामिसा से दौरए ह़दीस तक की ता'लीम वहीं मुकम्मल फरमाई।

## तदरीसो तसनीफ़ की शुरुआत

2014 में फराग़त के बाद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर,आगरा तशरीफ ले गये और एक साल वहां तदरीस फरमाई, फिर मज़ीद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी मरकज़ के हुक्म पर बंगलादेश के दारुल हुकूमत ढाका के जामिअ़तुल मदीना तशरीफ ले गये और वहीं पर दा'वते इस्लामी के जामिअ़ात के दरजए सानिया में चलने वाली इ़ल्मे सर्फ की किताब बनाम मराहुल अरवाह की उर्दू शरह़ शाफ़िकुल मिस्बाह और दरजए राबिअ़ा में चलने वाली इ़ल्मे नहव की किताब बनाम शरह जामी की उर्दू शरह़ अश शफीकुन नोअमानी तसनीफ फरमाई।

उसके बाद फिर जामिअ़तुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा तशरीफ लाकर दरजए सानिया में चलने वाली ह़दीस की किताब बनाम अल अरबईने नवाविय्या की उर्दू शरह़ शफ़ीकिया तह़रीर फरमाई, और तब से अब तक तस्नीफात का सिल्सिला जारी है। आखिरी मालूमात के मुताबिक अब तक कुल 50 से ज़ाइद किताबें तसनीफ़ हो चुकी हैं।

# खिलाफ़तो इजाज़त

25 अप्रैल 2024 ईसवी को शागिर्दे हाफिज़े मिल्लत, मुरीदे मुफ़्तिए आज़म हिन्द, खलिफ़ए बुरहाने मिल्लत, मुबल्लिगे इस्लाम, हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल मुबीन नोअमानी ने सिलसिलए कादरिया, रज़्विया की खिलाफ़तो इजाज़त से नवाज़ा।

# खिदमते दीन

हज़रत जिस तरह एक मुदर्रिस और मुसन्निफ़ हैं उसी तरह मुक़र्रिर और मुबल्लिग भी हैं। आप के इस्लाही बयानात खौफे खुदा व इश्क़े मुस्तफा से लबरेज़ होते हैं। सुनने वालों पर रिक्कत तारी होती और दीन से मुहब्बत नसीब होती है। मज़ीद वक़्तन फ़वक़्तन मुख्तलिफ़ दीनी तहरीकें भी चलाते रहते हैं। अभी हाल ही में {दीन सीखो और इनाम पाओ} के नाम से घर घर दीनी तालीम पहुँचाने की तहरीक शुरू फरमाई है। अल्लाह पाक हज़रत की इस कोशिश को अपनी बारगाह में क़बूल फरमा कर तरक्की अता फरमाये। अमीन

अल्लाह पाक से दुआ है कि मौसूफ को बे बहा बरकातो समरात से नवाज़े और इस कारहाए नुमाया को अपनी बारगाह में शर्फे क़बूलियत अ़ता करके मौसूफ के लिये तोशए आखिरत बनाए। आमीन

**अज़ : अल आजिज़ मुहम्मद शादाब खान मदनी कोटा राजस्थान**

# दीने इस्लाम की खूबियाँ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْفِ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْقِ اَمَّا بَعْد، فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَ عَلٰی اٰلِکَ وَ اَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَ عَلٰی اٰلِکَ وَ اَصْحٰبِکَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

# दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

**ऐ आशिकाने रसूल!** आज मै आपके सामने दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत में ऐसी हदीस पाक बयान करने लगा हूँ जिसको आपने कई बार सुना होगा, लेकिन उस के पीछे जो राज़ पोशीदा है उस के बारे में शायद ही आपका ख़्याल गया होगा।

हाफ़िज़ मुहम्मद शर्फ़ुद्दीन अब्दुल मुअमिन बिन खलफ दमयाती رحمۃ اللہ علیہ ने अपनी किताब में मुस्नद अहमद बिन हम्बल के हवाले से इस हदीसे पाक को नक़्ल फरमाया है चुनांचे:

हज़रते अबू तल्हा अंसारी رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि एक मर्तबा सुब्ह के वक़्त अल्लाह के आखिरी नबी صلی اللہ علیہ و الہ و سلم के चेहरे पर ख़ुशी की निशानी ज़ाहिर थी, सहाबए किराम ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ و الہ وسلم, आज आप बहुत ख़ुश नज़र आ रहे हैं ? फ़रमाया: मेरे पास मेरे रब की तरफ़ से एक आने वाला आया और मुझ से अर्ज़ किया कि आप का जो उम्मती आप पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ेगा अल्लाह पाक उस के लिए दस नेकियां लिखेगा और उस के दस गुनाह मिटा देगा और उस के दस दर्जात बुलंद फ़रमाएगा और उस पर उतनी ही रहमत भेजेगा।

(مسند احمد، حدیث ابی طلحۃ، رقم ۱۶۳۵۲، ج۵، ص۵۰۹)

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** इस हदीसे पाक से पता चला कि अल्लाह पाक दुरूदे पाक पढ़ने वाले को चार चीज़ें अता फ़रमाता है:

**(1)---** उस के लिए दस नेकियां लिखेगा यानी उस को दस नेकियां मिलेंगी।

**(2)---** दस गुनाह जो उसने गुज़रे हुए ज़माने में किए मिटा देगा यानी माफ़ हो जाऐंगे।

**(3)---** और उस के दस दर्जात बुलंद फ़रमाएगा यानी जन्नत में उस के दस दर्जात बुलंद होंगे।

**(4)---** अल्लाह पाक दुरूद पढ़ने वाले पर उतनी ही यानी दस रहमतें भेजेगा।

## येह राज़ पोशीदा है

दुरूदे पाक की इस फ़ज़ीलत में जो राज़ पोशीदा यानी छुपा हुआ है वह येह है कि इस हदीस में सबसे पहले नेकियों के मिलने, फिर गुनाहों के मिटाए जाने, फिर दर्जात के बुलंद होने को क्यों बयान फ़रमाया ? यानी येह तर्तीब ही क्यों ? इस का उल्टा क्यों नहीं ? कि पहले गुनाह के मिटने को बयान किया जाता फिर नेकियों के मिलने और आख़िर में दर्जात की बुलंदी को बयान किया जाता, या पहले दर्जात की बुलंदी, फिर गुनाहों के मिटने और आख़िर में नेकियों के मिलने का तज़्किरा किया जाता, मगर इस तर्तीब को छोड़ कर पहले नेकियों के मिलने, फिर गुनाहों के मिटने और इस के बाद में दर्जात के बुलंद होने को बयान किया गया है। इस को आसान लफ़्ज़ों में यूं समझिए कि पहले मौजूदा ज़माने में मिलने और फिर गुज़रे हुए ज़माने में किए हुए गुनाहों की भरपाई, और फिर आने वाले ज़माने में दर्जात की बुलंदी की बात की गई है।

## सवाल येह है

अब सवाल येह है कि इस्लाम के जहां हर फ़रमान में बेशुमार हिक्मतें छुपी होती हैं, तो इस फ़रमान में कौन सी हिक्मत छुपी है ?

येह था सवाल, अब इस का जवाब सुनिए कि इस में क्या हिक्मत और क्या राज़ है ?

ऐ आशिक़ाने रसूल! इस में बहुत बड़ी हिक्मत छुपी है, और येह हिक्मत इन्सानी हालात के मुताबिक़, उस की नफ़्सियात के मुताबिक़,और अक़्लो शुऊर के मुताबिक़ और मुवाफ़िक़ है, और इस हिक्मत से येह भी पता चलेगा कि हमारे नबी صلی اللہ علیہ والہ وسلم को मुआशरे के बारे में मुकम्मल इल्म है, और उनका एक एक फ़रमान ज़िंदगी देने वाला और अमल करने के लाइक़ है।

## इन्सान की हालत और आदत

इस हिक्मत को समझने के लिए पहले इन्सान की हालत और आदत को समझना पड़ेगा, और वह येह कि एक शख़्स जो कि बड़ा मालदार था, जिसके पास बेशुमार दौलत थी, और वह बड़े आलीशान महल्लात और बेशुमार जायदाद का मालिक था, जिन से ऐशो आराम ख़ूब झलक रहा था, हर वक़्त दरवाज़े पर नौकरों का झुरमुट रहता था। बड़ी खुशहाली वाली ज़िंदगी गुज़ार रहा था।

## सब कुछ जाता रहा

मगर यकायक फ़ना का बादल गरजा, आफ़तो मुसीबत की आंधी चली और दुनिया में देर तक ख़ुशहाल रहने की उम्मीदें ख़ाक में मिल कर रह गईं, खुशियों और शादमानियों से हंसते बस्ते घर को तबाही ने आ लिया, वक़्त की मार ऐसी पड़ी कि उस से येह सारी चीज़ें जाती रहीं, और रौशनियों से

जगमगाते क़ुसूर यानी महल्लात से घुप अँधेरी झोपड़ी में मुंतक़िल यानी पहुँच गया। कल तक अहलो इयाल यानी घर वालों की रौनक़ों में शादाँ और मसरूर यानी खुश था मगर आज लकड़ी की वहशत नाक यानी डरावनी छोपड़ी और तन्हाइयों में मग़मूमो रंजूर यानी गम्ज़दा है, यूं कह लीजिए कि कल का करोड़ पति आज का रोड पति बन गया, यहां तक कि एक वक़्त का खाना, और जिस्म छुपाने के लिए कपड़ा तक ना रहा, बिल्कुल कंगालो ख़स्ता हाल हो गया। भूक और प्यास से बेताब है, जिस्म नंगा है। पास में एक रुपए नहीं हैं।

## अब इस को किस चीज़ की फ़िक्र होगी ?

अब आप बताईए क्या उस को अपने (past) यानी गुज़रे हुए ज़माने की फ़िक्र होगी ? (future) यानी आने वाले ज़माने की फ़िक्र होगी ? नहीं ना, वह तो सोचेगा कि मेरा (past) यानी गुज़रा हुआ ज़माना दुरुस्त हो या ना हो, मेरा (future) यानी आने वाला ज़माना सही हो या ना हो, मेरा सिर्फ (present) यानी मौजूदा हाल सही हो जाये, मुझे अभी कुछ खाने, पीने को मिल जाये जिससे मैं अपनी जान बचा सकूँ, कोई कपड़ा मिल जाये जिससे मैं अपना जिस्म छुपा सकूँ, इस हालत में ना उस को अपने past की याद और ना future की फ़िक्र, अगर फ़िक्र है तो अपने present यानी मौजूदा हालत के दुरुस्त होने की है।

## अब past की याद सताएगी

अच्छा! उस के खाने पीने और जिस्म छुपाने का इंतिज़ाम हो गया, उस का present यानी मौजूदा हालत दुरुस्त हो गई, तो अब उस के दिल में क्या ख़्याल आएगा ? अब उस के दिल में येह ख़्याल आएगा कि मेरी past यानी गुज़रे हुए ज़माने में लुट जाने वाली दौलत मुझे मिल जाये, जो मुझे नुक़्सान हुआ है उस की भरपाई हो जाये, मेरा खोया हुआ वक़ार, इक़्तिदार, इफ़्तिख़ार,

मिल जाये, मेरा past यानी गुज़रा हुआ ज़माना दुरुस्त हो जाये। सबसे पहले उसे फ़िक्र थी present यानी मौजूदा हालत की, जब वह दुरुस्त हुई, फ़ौरन past यानी गुज़रे हुए ज़माने की याद सताने लगी।

## अब future की याद सताएगी

अच्छा जनाब चलिए, उस का past यानी गुज़रा हुआ ज़माना भी दुरुस्त हो जाये, उस का लुटा हुआ तमाम मालो दौलत, इज़्ज़तो वज़ारत, हुकूमतो सदारत सब वापस मिल जाये, तो अब क्या होगा ? अब उस को फ़ौरन अपने future यानी आने वाले ज़माने की याद सताएगी, कि अब मेरा present यानी मौजूदा हालत भी दुरुस्त हो गई, मेरा past यानी गुज़री हुई हालत भी दुरुस्त हो गई, अब मुझे अपने future यानी आने वाले वक़्त को दुरुस्त करना चाहिए। जिन चीज़ों की वजह से मुझे ग़ुर्बतो इफ़्लास की हालत पेश आई थी, जिन वुजूहात की बिना पर मैं एक एक रुपए को तरसा था उनसे बच कर चलना चाहिए ताकि फिर कभी ऐसे हालात ना देखने पड़ें और मैं हमेशा ख़ुशहाल और मालदार रहूँ।

## इन्सान की हालत के मुताबिक़ हदीस

**ऐ आशिकाने रसूल!** आप देखें आदमी को पहले present यानी मौजूदा हालत की फ़िक्र, फिर past यानी गुज़री हुई हालत की फ़िक्र और फिर future यानी आने वाली हालत की फ़िक्र होती है, येह इन्सान की फ़ितरत है, उस की आदत है, अब इसी क़ाएदे और क़ानून को सामने रख कर मेरे नबी, आपके नबी, हमारे नबी, अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मुहम्मदे अरबी ﷺ की हदीस मुलाहिज़ा कीजिए फरमाया :

जो उम्मती आप पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ेगा अल्लाह पाक उस के लिए दस नेकियां लिखेगा और उस के दस गुनाह मिटा देगा और उस के दस दर्जात बुलंद फ़रमाएगा और उस पर उतनी ही रहमत भेजेगा।

## तीनों हालतें दुरुस्त

**अल्लाहु अकबर!** नेकी के मिलने की बात पहले की, और मिलना येह मौजूदा हालत का दुरुस्त होना है जैसे कि उस कंगाल शख़्स को पहले कुछ मिला, फिर past यानी गुज़रे हुए ज़माने में किए हुए गुनाहों को मिटाने की बात की, और पिछले गुनाह मिटाना, past यानी गुज़रे हुए ज़माने का दुरुस्त होना है, फिर आख़िर में जन्नत के अंदर दर्जात की बुलंदी की बात की, और जन्नत अभी नहीं मिलेगी बल्कि वह तो future यानी आने वाले ज़माने में मिलेगी, लिहाज़ा येह future यानी आने वाले ज़माने का दुरुस्त होना है।

**अल्लाहु अकबर! ऐ आशिक़ाने रसूल!** क़ुर्बान जाईए , अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मुहम्मदे अरबी ﷺपर, कि जो आपﷺ पर दुरूदे पाक पढ़ता है, आप पर दुरूद पढ़ने की बरकत से पढ़ने वाले की तीनों हालतें दुरुस्त हो जाती हैं। हमारे नबी ﷺकी कितनी प्यारी हदीस है, तभी तो आला हज़रत लिखते हैं:

मैं निसार तेरे कलाम पर मिली यूँ तो किस को ज़बां नहीं
वह सुख़न है जिसमें सुख़न ना हो वह बयाँ है जिसका बयाँ नहीं

## इतना ही नहीं बल्कि और कुछ

और यही नहीं, बल्कि आगे भी फ़रमान मौजूद है, फ़रमाया: अल्लाह पाक उस पर उतनी ही रहमत भेजेगा। **अल्लाहु अकबर!** दुरूदे पाक पढ़ने वाले पर अल्लाह पाक की कितनी अताएं हैं, कितनी करम नवाज़ियाँ हैं। मेरे आला हज़रत लिखते हैं:

बरसता नहीं देख कर अबरे रहमत
बदों पर भी बरसा दे बरसाने वाले
अब आई शफ़ाअत की साअत अब आई
ज़रा चैन ले मेरे घबराने वाले

**दुरुदे पाक पढ़ लीजिए**

**सल्लल्लाहु अला मुहम्मद**

**सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम**

## किताब का मौज़ूअ

**ऐ आशिक़ाने रसूल !** इस किताब में हम चंद ज़रूरी चीज़ों के मुतअल्लिक़ पढ़ने की सआदत हासिल करेंगे मिसाल के तौर पर :

(1)अल्लाह पाक की सबसे बड़ी नेअमत कौन सी है ?

(2)हमारा दीन और हमारी हालत

(3)कौन सा दीन मक़बूल है ?

(4)दीन और इस्लाम का मा'ना क्या है ?

(5)इस्लाम क्यों आया ?

(6)दीने इस्लाम की क्या खूबियां हैं ?

(7)मुसलमानों से दर्दमंदाना अपील

**दुरुदे पाक पढ़ लीजिए**

**सल्लल्लाहु अला मुहम्मद**

**सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम**

# (1) अल्लाह पाक की सबसे बड़ी नेअमत कौन सी है ?

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** अल्हम्दुलिल्लाह इस्लाम (Islam) एक अम्न पसंद, सच्चा, प्यारा, कामिल व अकमल, इंतिहाई तेज़ी के साथ फैलता हुआ, आलमगीर मज़हब है, इस्लाम वह वाहिद और अकेला मज़हब है कि जिसके मानने और चाहने वालों की ता'दाद पूरी दुनिया में सब से ज़्यादा है, इस्लाम अपनी लाजवाब ख़ूबियों के सबब हमेशा हर दौर में ग़ालिब ही रहा, कभी मग़लूब हुआ, ना होगा, और जैसे जैसे ज़माना गुज़रता जा रहा है, इस्लाम की शान व अज़मत में मज़ीद इज़ाफ़ा होता जा रहा है, आज भी इस्लाम, हक़ की राह से बहक जाने वालों और कुफ्र की तारीकी यानी अँधेरों में भटके हुए लोगों को कुफ्र की दलदल से निकाल कर उन्हें अपने दामने करम में ले रहा है, इस्लाम में दीनी, दुन्यवी, उख़रवी, अख़लाक़ी, ज़ाहिरी, बातिनी, घरेलू, ख़ानदानी, मुआशरती और मुआशी बल्कि हर ऐतिबार से ज़िंदगी के तमाम शोबा जात यानी (departments) से वाबस्ता अफ़राद यानी लोगों के लिए बेहतरीन उसूल व ज़ाब्ते और शानदार हिदायात मौजूद हैं, जो इस की हक़्क़ानियत को साबित करते हैं कि **'इस्लाम मुकम्मल ज़ाबिता ए हयात है'** और दूसरी बात येह कि सिर्फ इस्लाम ही एक ऐसा दीन है जो अल्लाह पाक का पसंदीदा दीन है, जैसा कि पारा 6 सूरए माइदा की आयत नंबर 3 मे अल्लाह पाक अपने महबूब ﷺ को ख़बर देते हुए इरशाद फ़रमाता है :

## अल्लाह पाक का पसंदीदा दीन

اَلْیَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِیْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَیْكُمْ نِعْمَتِیْ وَ رَضِیْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِیْنًا ـ

**तर्जमा ए कंज़ुल ईमान :** आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी नेअमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसंद किया ।(پ٦، المائدہ: ٣)

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** हमें अल्लाह पाक का शुक्र अदा करना चाहिए कि अल्लाह पाक ने अपने फ़ज़्लो करम से हमें एक ऐसी अज़ीम नेअमत अता फ़रमाई है जो अल्लाह पाक को भी पसंद है, और वो नेअमत दीने इस्लाम है, लेकिन अफ़सोस का मक़ाम है कि आज हम दुनिया की वक़्ती लज़्ज़तों में गुम हो कर इस नेअमत की क़द्र करते नज़र नहीं आ रहे।

# (2) हमारा दीन और हमारी हालत

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** आज जब हम दुनिया के हालात पर नज़र डालते हैं तो दिल ख़ून के आँसू रोता है, वो उम्मत जिसे अल्लाह पाक ने

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ۔

**{तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुई}** कह कर तमाम उम्मत से अफ़ज़ल क़रार दिया, जो दुनिया को नेकी का हुक्म देने और बुराई से रोकने के लिए भेजी गई थी, अंधेरे में ज़िंदगी गुज़ारने वालों को रौशनी देने वाली थी, भटके हुए लोगों को सीधे रास्ते पर लाने वाली थी, इस्लाम के दामने रहमत में दाख़िल करने वाली थी, प्यार व महब्बत, अख़ुव्व्त व भाई चारगी का दर्स देने वाली थी, लेकिन आज वही उम्मत ख़ुद दीने इस्लाम से दूर होती जा रही है, आज ख़ुद नेकी के रास्ते से दूर होती जा रही है, आज ख़ुद बुराईयों में मुब्तला होती जा रही है, आज ख़ुद रौशनी से कोसों दूर अंधेरे में भटकती फिर रही है, मसाजिद ख़ाली हो रही हैं, क़ुरआने मजीद सिर्फ़ ता'वीज़ के तौर पर रखा जा रहा है, शरीअत के अहकाम और प्यारे नबी ﷺ की प्यारी प्यारी सुन्नतों पर अमल करने को बोझ समझा जा रहा है।

**ऐ आशिक़ाने रसूल !** हम उसी दीने इस्लाम के मानने वाले हैं जिसके लिए हमारे नबी ﷺ सहाबए किराम علیہم الرضوان और बुज़ुरगाने दीन ने बे शुमार ऐसी ऐसी क़ुर्बानियां दीं जिनका तज़किरा आँखों को नम कर देता है, आपकी

तरग़ीब के लिए दो दिल हिला देने वाले वाक़िआत पेश करता हूँ, चुनांचे :

## शि'बे अबी तालिब

एलाने नुबूव्वत के सातवें साल जब क़ुरैश के ग़ैर मुस्लिमों ने देखा कि इन के बेपनाह ज़ुल्म व सितम के बावजूद मुसलमानों की ता'दाद बढ़ती चली जा रही है और हमज़ा व उमर رضی اللہ عنہما जैसे हज़रात भी ईमान ला चुके हैं, हब्शा का बादशाह नज्जाशी ने भी मुसलमानों को अपने मुल्क में पनाह यानी ठिकाना दे दिया है तो उन्होंने येह फ़ैसला किया कि हज़रत मुहम्मद ﷺ को (मआज़ल्लाह) अलल ऐलान शहीद कर दिया जाये, जब आप ﷺ के चचा अबू तालिब को पता चला तो उन्होंने भी बनी हाशिम व बनी मुत्तलिब को जमा करके कहा कि हज़रत मुहम्मद ﷺ की हिफ़ाज़त के लिए उनको अपने घाटी में ले चलो, लिहाज़ा दोनों ख़ानदान हुज़ूर ﷺ को उस घाटी में ले गए।

(خصائصِ کُبریٰ ج۱ ص۲۴۹)

## समाजी कतए तअल्लुक़ (यानी सोशल बाईकाट)

जब क़ुरैश के ग़ैर मुस्लिमों को पता चला कि बनी हाशिम व बनी मुत्तलिब ने (सिवाए अबू लहब के) मुहम्मद ﷺ को अपने ज़िम्मे ले लिया है, तो उन्हों ने भी मिना शरीफ़ के क़रीब एक जगह में जमा हो कर अहद यानी वादा किया कि जब तक 'बनू हाशिम' मुहम्मद ﷺ को उन के हवाले नहीं करेंगे कोई शख़्स उनसे किसी किस्म का तअल्लुक़ नहीं रखेगा, ना उन के पास कोई चीज़ बेचीं जाएगी ना उनसे रिश्ता नाता किया जाएगा और ना ही उन्हें खुले अंदाज़ से घूमने फिरने दिया जाएगा, कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने इस पर सख़्ती से अमल करते हुए बनू हाशिम और बनू अब्दुल मुत्तलिब का मुकम्मल तौर पर "समाजी कतए तअल्लुक़" (यानी सोशल बाईकाट) कर दिया।

बड़ी सख़्ती से करते थे क़ुरैश उस घर की निगरानी
ना आने देते थे गल्ला इधर ता हद्दे इम्कानी
कोई गल्ले का सौदागर अगर बाहर से आ जाता
तो रस्ते ही में जा कर बू लहब कम्बख़्त बहकाता
पहाड़ों का दर्रा इक कलअ ए महसूर था गोया
ख़ुदा वालों को फ़ाक़ों मारना मंज़ूर था गोया
रसूलुल्लाह लेकिन मुतमइन थे और साबिर थे
ख़ुदा जिस हाल में रखे उसी हालत पे शाकिर थे

## चमड़े का टुकड़ा खा लिया

अब सूरते हाल येह थी कि मक्का शरीफ में बाहर से जो भी गल्ला (यानी अनाज) आता, कुफ़्फ़ार ज़ालिम उसे ख़ुद ही ख़रीद लेते और मुसलमानों तक ना पहुंचने देते, जब उस घाटी में मुक़य्यद रहने वालों के बच्चे भूक से बिलबिलाते तो कुफ़्फ़ार उन की आवाज़ों पर क़हक़हे लगाते और खुशी मनाते थे, ख़वातीन का दूध खुश्क हो गया था, सारे लोग कई कई रोज़ तक भूके पड़े रहते, बाज़ अवक़ात भूक से बेताब हो कर दरख़्तों के पत्ते उबाल कर खा कर पेट भरते, हज़रते सय्यिदुना सा’द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ عنہ का बयान है कि एक बार रात को उन्हें सूखे हुए चमड़े का एक टुकड़ा कहीं से मिल गया आप رضی اللہ عنہ ने उसे पानी से धोया, आग पर भूना, कूट कर पानी में घोला और सत्तू की तरह पी कर अपने पेट की आग बुझाई।(الرَّوضُ الاُنُف ج۲ ص۱۶۱)

वो भूकी बच्चियों का रूठ कर फिल फ़ौर मन जाना
ख़ुदा का नाम सुन कर सब्र की तस्वीर बन जाना
तड़पना भूक से कुछ रोज़ आखिर जान खो देना
वो माओं का फ़लक को देख कर चुप चाप रो देना

रज़ा व सब्र से दिन कट गए उन नेक बख़्तों के
कि खाने के लिए मिलते रहे पत्ते दरख़्तों के
गुज़ारे तीन साल इस रंग से ईमान वालों ने
दिखा दी शाने इस्तिक़लाल अपनी आन वालों ने

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** इस तरह का मुआमला एक दिन, या एक हफ़्ते, या एक महीना, या एक साल नहीं था बल्कि येह मुआमला तीन साल तक चला, लेकिन इतनी मुसीबतों के बावजूद किसी ने अपना दीन नहीं छोड़ा, सलाम है उनकी क़ुव्वते बर्दाश्त को, सलाम है उनकी हिम्मत को, आज अगर हम में से किसी को इस्लाम के तअल्लुक़ से थोड़ी सी परेशानी आ जाये तो घबरा जाते हैं, और येह बात बयान करते हुए काफ़ी अफ़सोस हो रहा है कि अपने आपको मुसलमान कहलाने वाले ऐसे भी लोग देखें गए हैं जो दुन्यवी कमाई के लिए, नौकरी के लिए, कारोबार को बरक़रार रखने के लिए, किसी दुन्यवी फ़ाइदे के लिए इस्लाम की हदों को तोड़ कर कुफ्र व शिर्क की हदों में दाख़िल हो जाते हैं, बल्कि बा'ज़ बद नसीब तो अपना नाम ही ग़ैर मुस्लिमों वाला रख लेते हैं और वो यूं दायरए इस्लाम से निकल कर काफ़िर हो जाते हैं, मआज़ल्लाह।

## ताइफ की रिक़्क़त अंगेज़ दास्तान

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** इस्लाम की ख़ातिर मुसीबतों को बर्दाश्त करने की कहानी बड़ी लंबी है उसी की एक कड़ी दास्ताने ताइफ है, ताइफ की रिक़्क़त अंगेज़ दास्तान भी अश्क़बार आँखों से पढ़िए एलाने नुबूव्वत के बाद नौ साल तक हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा ﷺ मक्का शरीफ के अंदर लोगों में इस्लाम की तब्लीग़ फ़रमाते रहे, मगर बहुत थोड़े अफ़राद यानी लोगों ने आप ﷺ की नेकी की दावत क़बूल की, कुफ़्फ़ारे बद अतवार की तरफ़ से मुख़ालिफ़त का ज़ोर रोज़ बरोज़ बढ़ता जा रहा था।

रसूलुल्लाह ﷺ और सहाबए किराम علیہم الرضوان को कुफ़्फ़ार बेहद सताते और तरह तरह से मज़ाक़ उड़ाते थे, लेकिन जब कुफ़्फ़ार की तरफ़ से ज़ुल्म व सितम की आंधियों ने ख़ूब ज़ोर पकड़ लिया तो रहमते आलम ﷺ ने ताइफ का इरादा फ़रमाया, ताकि वहां जा कर लोगों को इस्लाम की दा'वत इनायत फ़रमाएं, ताइफ पहुंच कर हुज़ूर ﷺ ने पहले पहल बनू सक़ीफ़ के तीन सरदारो को इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाया।

वो हादी जो ना हो सकता था गैरुल्लाह से ख़ाइफ़
दिया पैग़ामे हक़ ताइफ में ताइफ के रईसों को
चला इक रोज़ मक्के से निकल कर जानिबे ताइफ
दिखाई जिंसे रूहानी कमीनों को ख़सीसों को

## क़लम काँपता है !

**मगर अफ़सोस!** उन नादानों ने अल्लाह के नबी ﷺ की नेकी की दावत सुन कर बजाए सरे तस्लीम ख़म करने के इंतिहाई सरकशी का मुज़ाहिरा किया और तरह तरह से बकवास करने लगे, आह उन बद अख्लाक़ सरदारो ने ऐसे ऐसे गुस्ताख़ाना जुमले बके कि उन को कलमबंद करने से कलम काँपता है, मेरे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा ﷺ ने अब भी हिम्मत ना हारी, दूसरे लोगों की तरफ़ तशरीफ़ लाए और उन्हें इस्लाम की दावत पेश की, आह सद आह, अल्लाह पाक के प्यारे नबी ﷺ के पैग़ामे नजात को सुनने के लिए कोई तैयार ही ना था, अफ़सोस वो लोग अपने अज़ीम मुहसिन को दुश्मन समझ बैठे और तरह तरह से दिल आज़ारियो पर उतर आए, उन बे रहमों ने सिर्फ उलूल फुलूल बकने ही पर इक्तिफ़ा ना किया बल्कि ओबाश लड़कों को भी पीछे लगा दिया, आह वो ज़ालिम नौजवान, अल्लाह के आख़िरी नबी ﷺ की जान को आ गए और तालियाँ बजाते, तरह तरह से फब्तियां कसते पीछा करने लगे, यकायक उन ज़ालिमों ने पत्थर उठा लिए और देखते ही देखते अल्लाह

के आख़िरी नबी ﷺ के जिस्मे मुबारक पर पथराव शुरू कर दिया।

ना जाने चश्मे फ़लक ने येह ख़ूनी मंज़र कैसे देखा होगा ? आह ! जिस्मे नाज़नीन पत्थरों से ज़ख़्मी हो गया और इस क़द्र ख़ून शरीफ़ बहा कि नालैने मुबारक ख़ून से भर गईं, जब आप ﷺ बेक़रार हो कर बैठ जाते तो कुफ़्फ़ारे जफ़ा कार बाज़ू थाम कर उठा देते, जब फिर चलने लगते तो दोबारा पत्थर बरसाते और साथ साथ हंसते जाते।

बढ़े अंबोह दर अंबोह पत्थर ले के दीवाने
लगे मींह पत्थरों का रहमते आलम पे बरसाने
वो अबरे लुत्फ़ जिसके साए को गुलशन तरसते थे
यहां ताइफ में उस के जिस्म पर पत्थर बरसते थे
जगह देते थे जिन को हामिलाने अर्श आँखों पर
वो नालैने मुबारक हाय ख़ू से भर गई यकसर
हुज़ूर इस जोर से जब चूर हो कर बैठ जाते थे
शकी आते थे बाज़ू थाम कर ऊपर उठाते थे

## मुसलमानों का बिगड़ा हुआ किरदार

**ऐ प्यारे मुस्तफ़ा ﷺ की दीवानगी में झूमने वाले आशिक़ाने रसूल!** हम उसी दीन के मानने वाले हैं जिसको हम तक पहुंचाने के लिए हमारे अस्लाफ़ ने अपनी ज़िंदगिया ख़त्म कर दीं, ग़ैरों के ज़ुल्म व सितम सहे, अपना घर बार छोड़ा, बाल बच्चे छोड़े, अपना इलाक़ा और वतन छोड़ा, और ऐसी ऐसी क़ुर्बानियां दीं जिनका तसव्वुर ही नहीं किया जा सकता, लेकिन आह! वो इस्लाम जो अपने वतन से बड़ी शान व शौकत से निकला था आज वो परदेस में ग़रीबुल गु-रबा है, मुसलमानों की खस्ता हाली आपके सामने है, क्या बे अमली के सैलाब और मस्जिदों की वीरानी देखकर आपका दिल नहीं

जलता ? आह मग़रिबी फ़ैशन की यलग़ार, फ़िरंगी तहज़ीब की तूमार, क़दम क़दम पर बे हयाइयों और गुनाहों की भरमार, हाय! मुसलमानों का बिगड़ा हुआ किरदार। येह सब बातें मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही और आख़िरत की बेहतरी के तलबगार मुसलमान के लिए बेहद ग़म का बाइस हैं।

आह! इस्लाम तेरे चाहने वाले ना रहे
जिनका तू चांद था अफ़सोस वो हाले ना रहे

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** हमारे बुज़ुर्गाने दीन में आखिर वो कौन सा जज़्बा था जिसने हर मर्द व औरत बल्कि बच्चे बच्चे को इस्लाम का शैदाई बना दिया था ? इस का यही जवाब है कि :

वो कामिलुल ईमान मोमिन थे, वो जोशे ईमानी के जज़्बे से सरशार थे और आह आज का मुसलमान अक्सर ईमान की कमज़ोरी का शिकार है, उन के पेशे नज़र हर दम अल्लाह व रसूल ﷺ की रिज़ा हुआ करती थी, मगर हाय अफ़सोस! आज के मुसलमानों की अक्सरियत की अब इस तरफ़ कोई तवज्जोह नहीं, वो अल्लाह व रसूल ﷺ की मुहब्बत से सरशार थे और वाय बद नसीबी आज के मुसलमानों की भारी अक्सरियत दुनिया की मुहब्बत में गिरफ्तार है, वो आ'ला किरदार के मालिक हुआ करते थे, मगर आज के अक्सर मुसलमान फ़क़त गुफ़्तार (यानी बातों) के ग़ाज़ी बन कर रह गए हैं, आह सद हज़ार आह! हमने दुनिया की मुहब्बत में डूब कर, अल्लाह पाक की रिज़ा वाले कामों से दूर हो कर, अपनी ज़िंदगियो को गुनाहों से आलूद कर के, अपने प्यारे आक़ा ﷺ की प्यारी प्यारी सुन्नतों के साँचे मे ख़ुद को ढालने के बजाये ग़ैरों के फ़ैशन को अपना कर अपनी हालत ख़ुद आप बिगाड़ डाली है, पारा 13 सूरए रअद की ग्यारहवीं आयत में अल्लाह पाक इरशाद फरमाता है:

اِنَّ اللّٰهَ لَا یُغَیِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى یُغَیِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ؕ

**तर्जमा ए कंज़ुल ईमान :** बेशक अल्लाह किसी क़ौम से अपनी नेअमत नहीं बदलता जब तक वो ख़ुद अपनी हालत ना बदल दें। (پ۱۳،الرعد،۱۱)

**अफ़सोस सद हज़ार अफ़सोस!** बे अमली के सबब हम ज़िल्लत व रुसवाई के गहरे गढ़े में निहायत ही तेज़ी के साथ गिरते चले जा रहे हैं, एक वक़्त वो था कि दुनिया में मुसलमानो का एक वकार था और आज मुसलमान ग़ैर मुस्लिमों से ख़ौफ़ज़दा है।

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** अब यहां पर एक सवाल पैदा होता है कि मुसलमानों में बे अमली कैसे आई ? हालाँकि पहले के मुसलमान तो ऐसे नहीं थे, फिर अब के मुसलमान ऐसे क्यों ? आख़िर येह कैसे हुआ ? कौन से वो अस्बाब हैं जिनकी वजह से हम बुलंदी से पस्ती की जानिब आ गए इस सवाल का एक ही जवाब है और वो येह कि हमने अल्लाह के दीन को पसे पुश्त यानी पीठ के पीछे डाल दिया, यानी दुनिया को अपने आगे और दीन को पीछे कर दिया है, अब हर एक को अपनी दुन्यवी तरक़्क़ी का ग़म ही सता रहा है, दीने इस्लाम की तरक़्क़ी, क़ब्र व आख़िरत की तरक़्क़ी की फ़िक्र ख़त्म हो गई है।

## दीने इस्लाम की अहमियत

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** हालाँकि दीने इस्लाम सिर्फ एक मज़हब नहीं, बल्कि एक मुकम्मल ज़ाबितए हयात यानी ज़िंदा रहने का उसूल है, येह इन्सान को उस की ज़िंदगी के हर पहलू में रहनुमाई देता है। इबादात से लेकर मुआमलात तक, अख्लाक़ से लेकर सियासत तक और ख़ुशी की बात येह कि हमारे अल्लाह पाक को भी जो दीन प्यारा और पसंदीदा है वो इस्लाम है चुनांचे क़ुरआने पाक में अल्लाह पाक ने फ़रमाया :

اِنَّ الدِّیْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ۔ (پ۳، آل عمران،۱۹)

**तर्जमा ए कंज़ुल ईमान:** बे शक अल्लाह के यहां इस्लाम ही दीन है।

और इस्लाम की ख़ूबियों में से एक ख़ूबी येह भी है कि इस्लाम इन्सान को उस की फ़ितरत के ऐन मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने का रास्ता दिखाता है, जहां दुनिया की भलाई भी है और आख़िरत की कामयाबी भी।

## ईमान वालों को बिशारतें

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** अल्लाह पाक ने ईमान वालों को ईमान लाने पर कई बिशारतें यानी खुश खबरियाँ भी दी हैं इन्ही में से चंद येह हैं :

وَ بَشِّرِ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَنَّ لَهُمۡ قَدَمَ صِدۡقٍ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ ۔ (پارہ۱۱یونس۲)

**तर्जमा ए कंज़ुल इरफ़ान :** ईमान वालों को ख़ुश ख़बरी दो कि उनके लिए उनके रब के पास सच का मक़ाम है।

मुफ़स्सिरीने किराम ने क़दमे सिद्क़ के मा'ना बयान फ़रमाए हैं, बेहतरीन मक़ाम, जन्नत में बुलंद मर्तबा, नेक आमाल, नेक आमाल का बदला और नबी करीम ﷺ की शफ़ाअत। (تفسیر صراط الجنان، یونس، تحت الآیۃ۲)

اِنَّ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ یَهۡدِیۡهِمۡ رَبُّهُمۡ بِاِیۡمَانِهِمۡ ۔ (پارہ۱۱یونس۹)

**तर्जमा ए कंज़ुल इरफ़ान :** बेशक वो लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे आ'माल किए उनका रब उनके ईमान के सबब उनकी रहनुमाई फ़रमाएगा।

**सुब्हानल्लाह!** कितनी प्यारी फ़ज़ीलत है कि मोमिनीन की जन्नत की तरफ़ रहनुमाई अल्लाह पाक की जानिब से होगी। (تفسیر صراط الجنان، یونس، تحت الآیۃ۹)

اِنَّ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِیۡعُ اَجۡرَ مَنۡ اَحۡسَنَ عَمَلًا ۔ (پارہ۱۵الکھف۳۰)

**तर्जमा ए कंज़ुल इरफ़ान:** बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक आ'माल किए हम उनका अज्र ज़ाएअ नहीं करते जो अच्छे अमल करने वाले हों।

اِنَّ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتۡ لَهُمۡ جَنّٰتُ الۡفِرۡدَوۡسِ نُزُلًا۔ (پارہ١٦،الکھف١٠٧)

**तर्जमा ए कंज़ुल इरफ़ान:** बेशक जो लोग ईमान लाए और अच्छे आमाल किए उनकी मेहमानी के लिए फ़िर्दौस के बाग़ात हैं।

اِنَّ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَیَجۡعَلُ لَهُمُ الرَّحۡمٰنُ وُدًّا۔ (پارہ١٦،مریم٩٦)

**तर्जमा ए कंज़ुल इरफ़ान:** बेशक वो जो ईमान लाए और नेक आमाल किए अनक़रीब रहमान उनके लिए मुहब्बत पैदा कर देगा।

तफ़सीरे सिरातुल जिनान में है इरशाद फ़रमाया कि बेशक वो जो ईमान लाए और नेक आ'माल किए अनक़रीब अल्लाह पाक उन्हें अपना महबूब बना लेगा और अपने बंदों के दिलों में उनकी महब्बत डाल देगा।

(تفسیر صراط الجنان، مریم، تحت الآیۃ:٩٦)

اِنَّ اللّٰهَ یُدۡخِلُ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجۡرِیۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ یُحَلَّوۡنَ فِیۡهَا مِنۡ اَسَاوِرَ مِنۡ ذَهَبٍ وَّ لُؤۡلُؤًا۔ وَ لِبَاسُهُمۡ فِیۡهَا حَرِیۡرٌ۔ (پارہ١٧،الحج٢٣)

**तर्जमा ए कंज़ुल इरफ़ान:** बेशक अल्लाह ईमान वालों को और नेक आमाल करने वालों को उन बाग़ों में दाख़िल फ़रमाएगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं, उन्हें उन बाग़ों में सोने के कंगन और मोती पहनाए जाऐंगे और जन्नतों में उनका लिबास रेशम होगा।

اِنَّ اللّٰهَ یُدٰفِعُ عَنِ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا۔ (پارہ١٧،الحج٣٨)

**तर्जमा ए कंज़ुल इरफ़ान:** बेशक अल्लाह मुसलमानों से बलाऐं दूर करता है।

अल्लामा अहमद सावी علیہ الرحمہ फ़रमाते हैं कि इस आयत के नाज़िल होने का सबब अगरचे ख़ास है लेकिन अल्फ़ाज़ के ऐतिबार इस का सबब आम है, इसलिए मुसलमान अगरचे बलाओ और मुसीबतों वग़ैरा से

आज़माऐ जाएं बिल आख़िर इज़्ज़त, नुसरत और बड़ी कामयाबी मुसलमानों के लिए है और येह मुसीबतें उनके गुनाहों का कफ़्फ़ारा और दर्जात की बुलंदी का सबब हैं। (صاوی، الحج، تحت الآیۃ:۳۸، ۴/۱۳۴۱-۱۳۴۰)

اِنَّ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَہُمۡ اَجۡرٌ غَیۡرُ مَمۡنُوۡنٍ۔ (پارہ۲۴حم السجدۃ۸)

**तर्जमा ए कंज़ुल इरफ़ान:** बेशक ईमान लाने वालों और अच्छे आमाल करने वालों के लिए बे इंतिहा सवाब है।

اِنَّ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِکَ ہُمۡ خَیۡرُ الۡبَرِیَّۃِ۔ (پارہ۳۰البینہ،۷)

**तर्जमा ए कंज़ुल इरफ़ान :** बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किए वही तमाम मख़लूक़ में सबसे बेहतर हैं।

وَ بَشِّرِ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ بِاَنَّ لَہُمۡ مِّنَ اللّٰہِ فَضۡلًا کَبِیۡرًا۔ (پارہ۲۲الاحزاب۴۷)

**तर्जमा ए कंज़ुल इरफ़ान:** और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दे दो कि उनके लिए अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल है।

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** देखा आपने अल्लाह पाक ने ईमान वालों को कैसी कैसी नेअमतों, सआदतों, बरकतों, रहमतों से सरफ़राज़ फ़रमाया है और क़ब्र व आख़िरत और जन्नत में मज़ीद सरफ़राज़ फ़रमाएगा और अल्लाह पाक हमें ज़िंदगी में ईमान पर इस्तिक़ामत और मरते वक़्त ईमान पर ख़ातिमा नसीब फ़रमा कर इन बिशारतों से मुशर्रफ़ फ़रमाए, आमीन।

नीज़ अल्लाह पाक ने क़ुरआने पाक में दीने इस्लाम क़बूल करने के बाद छोड़ने वालों के लिए वईद यानी अज़ाब भी बयान फ़रमाया है चुनांचे इरशाद होता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَ يُحِبُّوْنَهٗۤ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۫ يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ لَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآىِٕمٍ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۵۴﴾ (پ۶، المائدہ، ۵۴)

**तर्जमा ए कंज़ुल ईमान:** ऐ ईमान वालो तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा, तो अनक़रीब अल्लाह ऐसे लोग लाएगा कि वो अल्लाह के प्यारे और अल्लाह उनका प्यारा, मुसलमानों पर नर्म और काफ़िरों पर सख़्त अल्लाह की राह में लड़ेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत का अंदेशा ना करेंगे, येह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और अल्लाह वुसअत वाला इल्म वाला है।

अल्लाह पाक बेनियाज़ है किसी के इस्लाम क़बूल करने और ना करने का मोहताज नहीं, जो इस्लाम को क़बूल करेगा अल्लाह पाक उसे दुनिया व आख़िरत में अपनी नेअमतों से नवाज़ेगा और जो उस के दीन से मुँह फेरेगा उसे दुनिया व आख़िरत में रुस्वा करेगा, यक़ीनन दीने इस्लाम हमारी ज़रूरत है, उस के अहकामात पर अमल करना हमारे लिए फ़ाइदेमंद है, दुनिया व आख़िरत की कामयाबी का सबब है, अल्लाह पाक से हम दुआ करते हैं कि वो हमें दीने इस्लाम में साबित क़दमी अता फ़रमाए।

## दीन पर अमल करने की हिकमतें

**ऐ आशिक़ाने रसूल !** शायद हम दीने इस्लाम को गहराई से समझ नहीं पाए इसी वजह से हमें इस दीन की क़द्र नहीं, यक़ीनन अगर हम दीन इस्लाम को अच्छे अंदाज़ से समझने में कामयाब हो जाएं तो कभी भी उस को छोड़ने के लिए तैयार ना हो, जैसा कि पहले होता था कि अगर किसी ग़ैर मुस्लिम को दीने इस्लाम की ख़ूबियों के बारे में पता चलता था तो वो फ़ौरन

इस्लाम क़बूल कर लेता था और कभी भी इस्लाम को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता था अगरचे उसे अपनी जान देनी पड़े।

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** अपने ज़ेहन में येह बात नक़्श कर लें कि दीने इस्लाम, ख़ुदा का पसंदीदा दीन है, उसे क़बूल किए बिग़ैर कोई नेकी अल्लाह की बारगाह में मक़बूल नहीं, ईमान व इस्लाम के बिग़ैर मरने वाला हमेशा हमेशा जहन्नम में रहेगा जबकि मोमिन हमेशा जन्नत में रहेगा।

अगर इस्लाम क़बूल नहीं किया तो कोई नेकी क़बूल नहीं अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُۚ وَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۸۵﴾

**तरजमा ए कंज़ुल इरफ़ान:** और जो कोई इस्लाम के इलावा कोई और दीन चाहेगा तो वो उस से हरगिज़ क़बूल ना किया जाएगा और वो आख़िरत में नुक़्सान उठाने वालों में से होगा। (پ۳، آل عمرٰن:۸۵)

मुस्लिम शरीफ़ में है हज़रते आईशा رضی اللہ عنہا से मरवी है, आप कहती हैं कि मैंने अर्ज़ की: ऐ अल्लाह के रसूल!ﷺ इब्ने जुदआन (नामी शख़्स) जाहिलियत के ज़माने में सिला रहमी करने वाला, मसाकीन को खिलाने पिलाने वाला था, तो क्या येह अच्छे काम उसे नफ़ा देंगे ? आप ﷺ ने फ़रमाया येह चीज़ें उसे नफ़ा नहीं देंगी, क्योंकि उस ने अल्लाह पाक से कभी दुआ नहीं की थी कि ऐ परवरदिगार क़ियामत के दिन मेरी मग़फ़िरत फ़रमा। (यानी ईमान नहीं लाया था। (مسلم، ج۱، ص۱۹۲)

इस हदीस के तहत इमाम नवावी ने क़ाज़ी इयाज़ علیہ الرحمہ का क़ौल नक़्ल फ़रमाया है कि इस बात पर उलमा का इजमाअ है कि काफ़िरों को उन के अमल किसी तरह का कोई नफ़ा नहीं देंगे। (المنھاج مع المسلم، ۸/۳)

और जो ईमान ना लाया वो हमेशा जहन्नम में रहेगा जैसा कि अल्लाह पाक फ़रमाता है :

وَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَاۤ اُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِۚ-هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ۠(۳۹)

**तर्जमा ए कंज़ुल इरफ़ान:** और वो जो कुफ्र करेंगे और मेरी आयतों को झुटलाएँगे, वो दोज़ख़ वाले होंगे, वो हमेशा उस में रहेंगे। (پ۱، البقرۃ:۳۹)

इमाम अबू मंसूर अब्दुल क़ाहिर बग़दादी علیہ الرحمہ लिखते हैं अहले सुन्नत और उम्मत के बेहतरीन लोगों का जन्नत व जहन्नम की हमेशगी, अहले जन्नत की हमेशगी और काफ़िरों के हमेशा हालते अज़ाब में रहने पर इजमाअ है। (اصول الدین، ص۲۶۳)

## दीन पर अमल करने की अक़्ली हिकमतें

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** दीने इस्लाम पर अमल करने में बेशुमार अकली और अख़लाक़ी हिकमतें भी पोशीदा हैं उन में से चंद येह हैं :

**(1) इन्फ़िरादी सुकून :** नमाज़, रोज़ा, ज़कात जैसे आ'माल इन्सान के दिल को सुकून देते हैं, आज जब कि दुनिया ज़ेहनी दबाव, डिप्रेशन और बेचैनी का शिकार है, इस्लाम दिलों का ईलाज पेश करता है, जैसा कि क़ुरआने पाक में अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ تَطْمَىٕنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِؕ-اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىٕنُّ الْقُلُوْبُؕ(۲۸) (پ۱۳، الرعد،۲۸)

**तर्जमा ए कंज़ुल ईमान:** वो जो ईमान लाए और उनके दिल अल्लाह की याद से चैन पाते हैं, सुन लो अल्लाह की याद ही में दिलों का चैन है।

**(2) इज्तिमाई भलाई :** इस्लाम अद्ल, भाई चारे, हमदर्दी और बराबरी का दर्स देता है, जब एक मुआशरा इस्लामी उसूलों पर चलता है तो वहां ज़ुल्म, करप्शन और बदअमनी का ख़ातिमा होता है।

**(3) रुहानी तरक़्क़ी :** इबादत इन्सान को अल्लाह से जोड़ती है, गुनाहों से पाक करती है, और बुलंद मर्तबा अता करती है।

दीने इस्लाम सिर्फ़ क़ब्र या आख़िरत के लिए नहीं, बल्कि दुनिया की ख़ुशहाली के लिए भी है, एक मुसलमान जब दीन पर अमल करता है तो वो दुनिया में बा इज़्ज़त, मुतमइन और कामयाब होता है और आख़िरत में जन्नत का वारिस बनता है।

## दीन की ज़रूरत

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** यक़ीनन दीने इस्लाम को अपनाना एक ज़िंदगी और इस को छोड़ देना मौत है, कि जिसने भी दीने इस्लाम से बेवफ़ाई की और इस दीन को छोड़ा वो इस दुनिया में ज़लीलो ख्वार हुआ और क़ब्र व आख़िरत में तबाह व बर्बाद हुआ, क्या आपने कभी इस पर सोचा है कि जब कोई दीने इस्लाम को छोड़ देता है तो उस की ज़िंदगी इंतिशार और ज़िल्लत का शिकार क्यों हो जाती हैं ? अगर नहीं सोचा तो सुनिए क़ुरआने मजीद में उस का सबब कुछ यूं बयान किया गया है :

وَ مَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِیْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِیْشَةً ضَنْكًا ـ (پ۱٦، طٰہٰ:۱۲۴)

**तर्जमा ए कंज़ुल ईमान:** और जिसने मेरी याद से मुँह फेरा, तो बेशक उस के लिए तंग ज़िंदगानी है।

इतना ही नहीं बल्कि इसी आयत में आगे इरशाद हुआ :

وَّ نَحْشُرُهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ اَعْمٰى ﴿۱۲۴﴾ (پ۱٦، طٰہٰ:۱۲۴)

**तर्जमा ए कंज़ुल ईमान:** और हम उसे क़ियामत के दिन अंधा उठाएँगे।

**अल्लाहु अकबर! ऐ आशिक़ाने रसूल!** हम अल्लाह पाक से दुआ करते हैं कि हमारा जीना मरना इस्लाम में ही हो, आमीन। सच तो यही है कि

दीन की ज़रूरत हमें है ना कि हमारी दीन को, दीन को अपनाना हमारी बक़ा, कामयाबी, इज़्ज़त और सुकून की ज़मानत है।

## ऐ मुसलमानो! बेदार हो जाओ

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** दुनिया की आरिज़ी यानी खत्म होने वाली चमक दमक हमें धोका ना दे, अस्ल कामयाबी अल्लाह की रिज़ा और जन्नत की दाइमी यानी हमेशा रहने वाली नेअमतें हैं, क्या हमें नज़र नहीं आता कि हम दीन से दूर हो कर दुनिया की ज़िल्लत में गिर चुके हैं ? क्या हम भूल गए कि इज़्ज़त सिर्फ दीने इस्लाम में है ?

हम जब भी दीन से दूर हुए दुनिया हम से दूर हो गई, हमने नमाज़ों को छोड़ा, बरकतें हमसे छिन गईं, हमने क़ुरआन को छोड़ा, हिदायत हम से छिन गई, हमने सुन्नतें नबवी को छोड़ दिया, कामयाबी हम से दूर हो गई।

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** आज भी अल्लाह की रहमत के दरवाज़े खुले हैं, अब भी वक़्त है, नमाज़ों को अपनी पहचान बना लीजिए, क़ुरआन को अपना रहबर बना लीजिए, रसूलल्लाह ﷺ की सुन्नत को अपनी ज़िंदगी का ज़ेवर बना लीजिए, याद रखिए जो अल्लाह के दीन को थामेगा, अल्लाह पाक उसे दुनिया व आख़िरत में सर बुलंदी देगा और जो दीन से ग़ाफ़िल होगा, दुनिया भी छिन जाएगी और आख़िरत भी तबाह व बर्बाद हो जाएगी।

## (3) कौन सा दीन मक़बूल है ?

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** जैसा कि आपको मालूम हुआ कि यक़ीनन अल्लाह पाक की बारगाह में दीन 'दीने इस्लाम' ही मक़बूल है, इसी तरह येह भी मालूम हुआ कि अल्लाह पाक दीने इस्लाम के इलावा दूसरा दीन अपनाने वालों से उनका दीन क़बूल नहीं फ़रमाता चुनांचे फ़रमाया :

وَ مَنْ یَّبْتَغِ غَیْرَ الْاِسْلَامِ دِیْنًا فَلَنْ یُّقْبَلَ مِنْهُۚ-وَ هُوَ فِی الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ(۸۵) (پ۳، آل عمران،۸۵)

**तर्जमा ए कंज़ुल ईमान:** और जो इस्लाम के सिवा कोई दीन चाहेगा वो हरगिज़ उस से क़बूल ना किया जाएगा और वो आख़िरत में ज़ियाँ कारों (यानी नुक़्सान उठाने वालों) में से है।

## अल्लाह तक पहुँचाने वाला दीन

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** इस आयत से बख़ूबी पता चलता है कि अल्लाह पाक तक पहुंचने के लिए, उस की रिज़ा हासिल करने के लिए और उस के नेअमत वाले घर जन्नत में जाने के लिए दीने इस्लाम को क़बूल करना और उस के अहकामात को मानना और उन पर अमल करना ज़रूरी है क्योंकि अब दुनिया में क़ियामत तक अल्लाह का दीन सिर्फ और सिर्फ दीने इस्लाम ही है।

## (4)दीन और इस्लाम का मा'ना क्या है ?

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** आपने सुना कि अल्लाह पाक को सिर्फ दीने इस्लाम पसंद है, अब मैं आपको बताता चलूं कि दीन का क्या मा'ना है ?

**सवाल :** दीन का क्या मा'ना है ?

**जवाब :** इमाम राग़िब अस्फ़हानी علیہ الرحمہ लिखते हैं :

"اَلدِّیْنُ یُقَالُ لِلطَّاعَةِ وَ الْجَزَاءِ

**तर्जमा:** दीन इताअत करने और जज़ा यानी बदला देने को कहते हैं।

पस दीन को दीन इसलिए कहते हैं कि दीन का मानने वाला अपने दीन की इताअत और फ़र्मांबरदारी करता है और उस के उस फ़र्मांबरदारी करने पर उस को उस का दीन बदला देता है।

और अल्लाह पाक ने दीने इस्लाम के मानने वालों को कैसा बदला दिया कि मुसलमानों को तमाम उम्मतों से अफ़ज़ल किया, क़ियामत में अपने

अर्श का साया देगा और अपनी नेअमतों वाले घर जन्नत में रहने का ठिकाना भी देगा।

## इस्लाम का मा'ना

**सवाल :** इस्लाम का क्या मा'ना है ?

**जवाब :** इमामे ग़ज़ाली عليہ الرحمہ इस्लाम का मा'ना बयान करते हुए इहयाउल उलूम जिल्द अव्वल में लिखते हैं: इस्लाम का मा'ना मानना और दिल से क़बूल करना और उस की इताअत पर सरे तस्लीम ख़म करना झुकाना है, नीज़ सरकशी, इन्कार और मुख़ालिफ़त को छोड़ देने का नाम इस्लाम है। (احیاء العلوم مترجم، ج۱، ص۳۶۵)

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** दीन और इस्लाम का मा'ना जानने के बाद अब येह सवाल भी सुनते चलें कि

## दीने मुहम्मद ﷺ का नाम इस्लाम

**सवाल:** अल्लाह के आख़िरी नबी, मुहम्मदे अरबी ﷺ के दीन का नाम दीने इस्लाम क्यों रखा गया ?

**जवाब: ऐ आशिक़ाने रसूल!** यक़ीनन येह सवाल काबिले ग़ौर है कि दुनिया में हज़रते आदम عليہ السلام से लेकर हज़रते ईसा عليہ السلام तक एक दीन नहीं बल्कि सैकड़ों दीन हुए मगर किसी भी दीन का नाम इस्लाम नहीं हुआ, बल्कि पिछले दीनों का नाम उनके नबी के नाम पर होता था मिसाल के तौर पर मूसा عليہ السلام के दीन का नाम दीने मूसवी तो हज़रते ईसा عليہ السلام के दीन का नाम दीने ईसवी, हज़रते इबराहीम عليہ السلام के दीन का नाम दीने इबराहीमी था, लिहाज़ा इसी तरीक़े पर अमल करते हुए मुहम्मदे अरबी ﷺ के दीन का नाम दीने मुहम्मदी होना चाहिए था मगर क्या वजह है कि मुहम्मदे अरबी ﷺ के दीन का नाम दीने इस्लाम रखा गया ?

इस का जवाब येह है कि अल्लाह पाक अपने आख़िरी नबी, मुहम्मदे अरबी ﷺ से बहुत मुहब्बत फ़रमाता है इसी वजह से तमाम नबियों और रसूलों में आप ﷺ को अफ़ज़ल बनाया, आपको सय्यिदुल अंबिया, सय्यिदुल मुरसलीन, और रह़मतुल्लिल आलमीन बनाया यहां तक कि सारे नबियों और रसूलों में से आप ﷺ को अपना महबूब बनाया, क्योंकि अल्लाह पाक को सारे आलम में सबसे प्यारा और सबसे महबूब हमारे नबी ﷺ हैं, कि उन्ही के लिए सारे आलम को वजूद बख़्शा यानी पैदा किया, अगर मुहम्मद ﷺ को पैदा करना मक़सूद ना होता तो अल्लाह पाक दुनिया को ना बनाता, इस मज़मून पर हदीसे क़ुदसी भी है, मगर क़ुर्बान जाइएं शाइरों की शायराना तखय्युलात पर, ज़हूरी साहिब ने इसी बात को एक अछूते अंदाज़ में बयान करते हुए लिखा:

फ़लक ख़ूबसूरत सजाया ना होता
किसी चीज़ का भी याँ साया ना होता
नहीं अर्शो कुर्सी ना चांद और तारे
शबो रोज़ होते ना होते नज़ारे
ना जिन्नों बशर और ना कोई परिंदा
हयाती ममाती ना मुर्दा ना ज़िंदा
ना हूरों ना आदम ना हव्वा की बातें
ना याक़ूब यूसुफ़ ज़ुलेख़ा की बातें
ना तख़्त और ताजों के सुलतान होते
हल्लो के वाली ना दरबान होते
ना मिलती किसी को यहां ज़िंदगानी
हवा ये ना होती ना होता ये पानी
नबी ना वली ग़ौस अब्दाल होते
ना होते महीने ना येह साल होते

सना ख़्वाँ ना होते ना ये ख़ुश बयानी
ना मीलाद होते ना ये ना'त ख्वानी
ना अर्शी ना फ़र्शी ना ख़ाकी ना नूरी
ज़माने में कुछ भी ना होता ज़ुहूरी
ना क़ुरआँ हदीसो हवाला ना होता
जो पैदा मेरा शाहे वाला ना होता

और अल्लाह पाक का करोड़हा करोड़ एहसान कि उसने हमें वो नबी अता फ़रमाया जो ख़ुद उस का महबूब है, तभी तो शायर वारफ़्तगी के आलम मे कहता है :

हम अपना अंदाज़ ज़माने से जुदा रखते हैं
क्यों ?
क्योंकि हम महबूब भी महबूबे ख़ुदा रखते हैं

अल्लाह पाक ने अपने महबूब ﷺ को वो मर्तबा दिया कि आज तक ना किसी को मिला और ना आइन्दा किसी को मिलेगा, इमामे इश्क़ो मुहब्बत, आ'ला हज़रत علیہ الرحمہ तभी तो लिखते हैं :

वो ख़ुदा ने है मर्तबा तुझको दिया
ना किसी को मिले ना किसी को मिला
कि कलामे मजीद ने खाई शहा
तेरे शहरो कलामो बक़ा की क़सम
तेरा मसनदे नाज़ है अर्शे बरीं
तेरा महरमे राज़ है रूहे अमीं
तू ही सरवरे हर दो जहाँ है शहा
तेरा मिस्ल नहीं है ख़ुदा की क़सम

अल्लाह पाक की अपने महबूब ﷺ से मुहब्बत का अंदाज़ा इस बात से लगा सकते हैं कि अल्लाह पाक ने अपने महबूब ﷺ के कई नाम अपने नाम पर रखे मिसाल के तौर पर: अल्लाह करीम है, महबूब भी करीम हैं, अल्लाह रहीम है, महबूब भी रहीम हैं, अल्लाह आलिम है, महबूब भी आलिम हैं, अल्लाह अव्वल है, महबूब भी अव्वल हैं, अल्लाह आख़िर है, महबूब भी आख़िर हैं, अल्लाह वली है, महबूब भी वली हैं। इस बारे में मज़ीद जानने के लिये सगे अत्तार की किताब **{मुहम्मद और अहमद के राज़}** पढ़िये।

अल्लाह पाक ने अपने नबी के नाम अपने नाम पर रखे, क्यों? मुहब्बत की वजह से और इसी मुहब्बत की वजह से अपने नबी के दीन का नाम भी अल्लाह पाक ने अपने नाम पर रखा, पस अल्लाह सलाम है, और अपने नबी के दीन का नाम इस्लाम रखा, और उस दीन को मानने वालों का नाम मुस्लिमीन रखा, इस के बारे में एक रिवायत भी सुनिए, चुनांचे :

## अल्लाह पाक ने इस उम्मत का नाम अपने नामों पर रखा

अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारुके आ'ज़म رضی اللہ عنہ का एक यहूदी पर कुछ आता था, उस चीज़ को लेने के लिए तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया : क़सम उस की जिसने मुहम्मद ﷺ को तमाम आदमियों से बर्गुज़ीदा किया मैं तुझे ना छोड़ूँगा?

यहूदी बोला: अल्लाह की क़सम अल्लाह ने उन्हें तमाम बशर से अफ़ज़ल ना किया, अमीरुल मोमिनीन फ़ारुके आज़म رضی اللہ عنہ ने उसे तमांचा मारा, वो बारगाहे रिसालत ﷺ मे शिकायत करने आया, हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने फ़रमाया : उमर! तुम उस तमांचे के बदले उसे राज़ी कर दो (यानी ज़िम्मी है) और हाँ ! ऐ यहूदी! आदम علیہ السلام सफ़ीयुल्लाह, इबराहीम علیہ السلام ख़लीलुल्लाह, नूह علیہ السلام नजीयुल्लाह, मूसा علیہ السلام कलीमुल्लाह, ईसा

علیہ السلام रूहुल्लाह हैं "وَاَنَاحَبِیْبُ اللہ" और मैं अल्लाह का हबीब यानी प्यारा हूँ, हाँ ! ऐ यहूदी! अल्लाह ने अपने दो नामों पर मेरी उम्मत के नाम रखे, अल्लाह सलाम है और मेरी उम्मत का नाम मुस्लिमीन रखा और अल्लाह मोमिन है और मेरी उम्मत को मोमिनीन का लक़ब दिया, हाँ ! ऐ यहूदी! तुम ज़माने में पहले हो وَنَحْنُ الْاٰخِرُوْنَ السَّابِقُوْنَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ और हम ज़माने में बाद, और क़ियामत के दिन हम सबसे पहले हैं, हाँ हाँ ! जन्नत हराम है अंबिया पर जब तक मैं उस में जल्वा अफ़रोज़ ना हो जाऊं, और हराम है उम्मतों पर जब तक मेरी उम्मत ना दाख़िल हो।

(المصنف لابن ابی شیبہ، کتاب الفضائل، حدیث ۱۸۵۱۱، ادارۃ القرآن والعلوم اسلامیہ، کراچی، ۱۱/۵۱۱)

इसी मज़मून को सुन्नियो के इमाम, इमाम अहमद रज़ा ख़ान علیہ الرحمہ अपने शायराना अंदाज़ में कुछ यूं बयान करते हैं :

जाएं ना जब तक ग़ुलाम, ख़ुल्द है सब पर हराम
मिल्क तो है आपका, तुम पे करोड़ो दुरूद

और आ'ला हज़रत के भाई जान, मौलाना हसन रज़ा ख़ान علیہ الرحمہ ने अपने ना'तिया दीवान "ज़ौक़े ना'त' में इसी मज़मून को कुछ यूं बयान किया है :

ना पहुँचेंगे जब तक गुनहगार उन के
ना जाएगी जन्नत में उम्मत किसी की

**ऐ आशिक़ाने रसूल !** हम और आप नाज़ करें, फख्र करें कि अल्लाह पाक ने अपने महबूब ﷺ के सदक़े हमें येह इज़्ज़त और अज़मत दी है, उस का शुक्र अदा करें कि हमें उसने अपने महबूब ﷺ की उम्मत में पैदा फ़रमाया है।

# (5)इस्लाम क्यों आया ?

**ऐ आशिक़ाने रसूल !** इसी तरह एक और सवाल ज़ेहन में आता है कि :

**सवाल :** दीने इस्लाम आने से पहले दुनिया में कई दीन मौजूद थे, लिहाज़ा उनके होते हुए दीने इस्लाम की ज़रूरत क्यों पड़ी ?

**जवाब :** उस का जवाब येह है कि यक़ीनन दीने इस्लाम आने से पहले दुनिया में कई दीन मौजूद थे, कई अब भी हैं और क़ियामत तक रहेंगे, मगर उन तमाम दीनों में दर्ज ज़ेल चीज़ें ना थीं और ना हैं :

(1) अल्लाह जो सब का ख़ालिक़े हक़ीक़ी है उस की मारिफत यानी पहचान और उस की इबादत का सही तरीक़ा ना था, बा'ज़ लोग अंबियाए किराम علیہ السلام को ख़ुदा का बेटा कहते, बा'ज़ बुतों को अपना मा'बूद मानते, तो बा'ज़ चाँद व सूरज, आग व दरख़्त को अपना मा'बूद समझते, बा'ज़ फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियां मानते थे, अल्लाह को मानने का जैसा हक़ है वैसा नहीं मानते थे बल्कि किसी ना किसी को शरीक ठहराते थे।

(2) उन तमाम दीनों में लोगों की जानें महफ़ूज़ ना थीं, जिसने जिसको चाहा क़त्ल कर दिया, जिसकी बिना पर उखुव्वत व भाई चारगी की जगह ज़ुल्म व बरबरियत ने ले रखी थी मुआशरे का सुकून पामाल था।

(3) उन तमाम दीनों में किसी का माल महफ़ूज़ ना था, आए दिन चोरी व डकैतियों का बाज़ार गर्म रहता, ताक़तवर कमज़ोर के माल पर क़बज़ा कर लेता।

(4) लोगों के नसब की हिफ़ाज़त का कोई इंतिज़ाम ना था, बदकारी को कोई ऐब ना समझा जाता जिसकी वजह से वलदुज़्जिना यानी हराम बच्चों की कसरत थी।

(5) अपने आपको अक़्लमंद कहलाने के बावजूद अक़्ल का सही इस्ति'माल ना था कि हराम व नाजाइज़ चीज़ों का इस्ति'माल आम था, शराब, जुआ, रिशवत और सूद जिसकी अक़्ल मज़म्मत करती है, दीनदार होने के बावजूद इन सब में मुलव्विस थे।

## इस्लाम की ज़रूरत

इन तमाम चीजों के पेशे नज़र एक ऐसे दीन की ज़रूरत थी जो मुआशरे से तमाम बुराईयों का ख़ातिमा कर के एक ख़ालिक़े हक़ीक़ी की इबादत का दर्स दे, लिहाज़ा अल्लाह पाक ने करम फ़रमाया और इन्सानों को दीने इस्लाम दे कर एहसान फ़रमाया, मेरे आक़ा, आ'ला हज़रत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, इमाम अहमद रज़ा ख़ान علیہ الرحمہ फतावा रज़विया, जिल्द 21 के सफ़ा नंबर 205 मे दीने इस्लाम के आने की वजह बयान करते हुए लिखते हैं : दीने इस्लाम के आने से दर्ज ज़ेल पाँच चीज़ों की हिफ़ाज़त हो गई।

**(1) इस्लाम दीन की हिफ़ाज़त के लिए आया:** ताकि इन्सान को हक़ व बातिल में तमीज़ हो सके, पस दीने इस्लाम सिर्फ एक ख़ुदा की इबादत का दर्स देता है।

**(2) इस्लाम जान की हिफ़ाज़त के लिए आया :** इसी लिए इस्लाम ने क़त्ले नाहक़ को हराम क़रार दिया है।

**(3) इस्लाम माल की हिफ़ाज़त के लिए आया :** इसी लिए इस्लाम ने चोरी, डाका ज़नी और ग़सब वग़ैरा को हराम क़रार दिया।

**(4) इस्लाम नसब की हिफ़ाज़त के लिए आया :** इसी लिए इस्लाम ने ज़िना (यानी बदकारी) को हराम क़रार दिया।

**(5) इस्लाम अक़्ल की हिफ़ाज़त के लिए आया :** इसी लिए इस्लाम ने उन चीज़ों को हराम क़रार दिया जिन चीज़ों से अक़्ल ज़ाइल खत्म होती है मिसाल के तौर पर नशे वाली चीज़ें। (فتاوی رضویہ جلد۔۲۱۔ص۲۰۵۔مطبوعہ پوربندر گجرات بتغیر)

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** यक़ीनन बेशुमार दीनों के होते हुए दुनिया में दीने इस्लाम की ज़रूरत थी इसी लिए अल्लाह पाक ने अपने आख़िरी नबी ﷺ को अपना आख़िरी दीन दे कर दुनिया में भेजा।

## (6)दीने इस्लाम की क्या खूबियां हैं ?

अब यहां पर एक और सवाल पैदा होता है कि दीने इस्लाम की खूबियां क्या क्या हैं ? जिनकी वजह से दीने इस्लाम तमाम दीन से अफ़ज़ल व आ'ला हो गया और उन ख़ूबियों की वजह से दीने इस्लाम का हक़ होना साबित हो जाये।

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** इस सवाल का जवाब कान लगा कर सुनिए, क्योंकि बा'ज़ मुसलमान भी दूसरे दीनों की तारीफ़ करते नहीं थकते, और बा'ज़ मआज़ल्लाह अपने दीन को छोड़कर दूसरे दीन को क़बूल कर लेते हैं।

अल्लाह पाक ने इस दीन को बहुत सारी ख़ूबियों से नवाज़ा है जिनमें से बा'ज़ ज़ाहिरी हैं और बा'ज़ बातिनी, ज़ाहिरी ख़ूबियों में से चंद येह हैं :

## इस्लाम की पहली ख़ूबी

(1) इस्लाम की पहली ख़ूबी येह है कि इस्लाम एक ऐसे ख़ुदा की इबादत करने को कहता है जिसके क़ब्ज़े और क़ुदरत में सारी कायनात है, हर बातिल दीन का ख़ुदा किसी ना किसी तरह दूसरे का मोहताज और मजबूर नज़र आता है मगर दीने इस्लाम का ख़ुदा ना किसी का मोहताज और ना मजबूर।

## इस्लाम की दूसरी ख़ूबी

(2) इस्लाम की दूसरी ख़ूबी येह है कि इस्लाम की इबादात और अहकाम में बेशुमार दीनी फ़ाइदों के साथ साथ दुन्यवी फ़ायदे भी हैं, और येह ख़ूबी दुनिया के किसी बातिल दीन में नहीं, आज साईंस भी इक़रार करती है

कि इस्लाम की इबादात और अहकामात में बेशुमार फ़ायदे हैं मिसाल के तौर पर सिर्फ वुज़ू को ले लीजिए,साइंस कहती है :

(1) "अगर गर्दन की पुश्त और अतराफ़ पर रोज़ाना पानी के चंद क़तरे लगा दिए जाएं तो रीढ़ की हड्डी और हराम मग्ज़ की ख़राबी से पैदा होने वाली बीमारियों से हिफ़ाज़त हासिल हो जाती है।

(2) एक डॉक्टर कहता है मैंने डिप्रेशन के चंद मरीज़ों के रोज़ाना पाँच बार मुंह धुलाए कुछ अर्से बाद उनकी बीमारी कम हो गई।

(3) एक डॉक्टर अपने मक़ाले में ए'तिराफ़ करता है कि मुसलमानों में मायूसी का मर्ज़ कम पाया जाता है क्योंकि वो दिन में कई मर्तबा हाथ, मुँह और पांव धोते (यानी वुज़ू करते) हैं।

(4) एक हार्ट स्पेशलिस्ट का बड़े वुसूक़ (यानी यकीन) के साथ कहना है : हाई ब्लड प्रैशर के मरीज़ को वुज़ू करवाओ फिर उस का ब्लड प्रैशर चैक करो लाज़िमन कम होगा, एक मुसलमान माहिरे नफ्सियात डाक्टर का कहना है : नफ़्सियाती बीमारियों का बेहतरीन इलाज वुज़ू है।", मग़रिबी माहिरीने नफ़्सियाती मरीज़ों को वुज़ू की तरह रोज़ाना कई बार बदन पर पानी लगवाते हैं।

(5) वुज़ू में जो तरतीब वार आ'ज़ा यानी मुहँ फिर हाथ फिर सर का मसह फिर पांव धोए जाते हैं येह भी हिकमत से ख़ाली नहीं, पहले हाथ पानी में डालने से जिस्म का आ'साबी निज़ाम मुत्तलअ यानी चौकन्ना हो जाता है और फिर आहिस्ता आहिस्ता चेहरे और दिमाग की रगों की तरफ़ उस के असरात पहुंचते हैं, वुज़ू में पहले हाथ धोने फिर कुल्ली करने फिर नाक में पानी डालने फिर चेहरा और दीगर आ'ज़ा धोने की तर्तीब फ़ालिज की रोक थाम के लिए मुफ़ीद है, अगर चेहरा धोने और मसह करने से वुज़ू की शुरुआत की जाये तो बदन कई बीमारियो में मुब्तला हो सकता है।

(6) 'अमरीकन कौंसिल फ़ार ब्यूटी' की सरकरदा मैंबर 'बेचर' नामी औरत ने क्या ख़ूब खुलासा किया है कहती है: 'मुसलमानों को किसी किस्म के कीमियावी लोशन की हाजत नहीं वुज़ू से उनका चेहरा धुल कर कई बीमारियों से महफ़ूज़ हो जाता है।

(7) डॉक्टर प्रोफ़ैसर जॉर्ज ऐल कहता है: ' मुँह धोने से दाढ़ी में उलझे हुए जरासीम बह जाते हैं, जड़ तक पानी पहुंचने से बालों की जड़ें मज़बूत होती हैं, दाढ़ी के ख़िलाल से जुओं का ख़तरा दूर होता है, दाढ़ी में पानी की तरी के ठहराव से गर्दन के पट्ठो, थाई राईड ग्लैंड और गले की बीमारियों से हिफ़ाज़त होती है।

## पागलों का डॉक्टर

(8) एक साहिब का बयान है मैं फ्रांस में एक जगह वुज़ू कर रहा था, एक शख़्स खड़ा बड़े ग़ौर से मुझे देखता रहा, जब मैं वुज़ू कर चुका तो उस ने मुझसे पूछा : आप कौन और कहाँ के रहने वाले हैं ? मैंने जवाब दिया: मैं फ़ुलां मुल्क का मुसलमान हूँ, पूछा आपके मुल्क में कितने पागलखाने हैं ? इस अजीब व ग़रीब सवाल पर मैं चौंका मगर मैंने कह दिया: दो चार होंगे, पूछा अभी तुमने क्या किया ? मैंने कहा वुज़ू, कहने लगा क्या रोज़ाना करते हो ? मैंने कहा हाँ, बल्कि पाँच वक़्त, वो बड़ा हैरान हुआ और बोला में Mental Hospital मे सर्जन हूँ और पागलपन के अस्बाब की तहक़ीक़ मेरा मश्ग़ला यानी काम है, मेरी तहक़ीक़ यानी रिसर्च येह है कि दिमाग से सारे बदन में सिग्नल जाते हैं और आ'ज़ा काम करते हैं, हमारा दिमाग़ हर वक़्त Fluid के अंदर Float कर रहा है, इसलिए हम भाग दौड़ करते हैं और दिमाग़ को कुछ नहीं होता अगर वो कोई Rigid (सख़्त) चीज़ होती तो अब तक टूट चुकी होती, दिमाग से चंद बारीक रगें (Conductor) मूसिल यानी पहुंचाने वाली बन कर हमारी गर्दन की पुश्त से सारे जिस्म को जाती हैं, अगर बाल बहुत बढ़ा

दिए जाएं और गर्दन की पुश्त को खुश्क रखा जाये तो उन रगों यानी (Conductor) मे खुश्की पैदा हो जाने का ख़तरा खड़ा हो जाता है और बारहा ऐसा भी होता है कि इंसान का दिमाग काम करना छोड़ देता है और वो पागल हो जाता है लिहाज़ा मैंने सोचा कि गर्दन की पुश्त को दिन में दो चार बार ज़रूर तर किया जाये, अभी मैंने देखा कि हाथ मुँह धोने के साथ साथ गर्दन के पीछे भी आपने कुछ किया है, वाक़िअतन आप लोग पागल नहीं हो सकते, मज़ीद येह कि मसह करने से लू लगने और गर्दन तोड़ बुख़ार से भी बचत होती है।

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** ये बातें सुनकर आपको ख़ुशी महसूस हो रही होगी कि वाह कितना ख़ूब हमारा दीने इस्लाम है इसकी इबादात की तारीफ़ें ग़ैर भी कर रहे हैं और ऐसा क्यों ना हो कि दुनिया के तमाम बातिल दीन ख़ुद इन्सानों के बनाए हुए हैं जबकि दीने इस्लाम सारी कायनात के ख़ुदा का बनाया हुआ है।

येह तो सिर्फ वुज़ू की खूबियां और हिकमतें हैं इसी तरह आप नमाज़, रोज़ा, हज और ज़कात को ले लीजिए, उनके भी दीनी फ़ाइदों के साथ साथ दुन्यवी फ़ायदे हैं, इसी तरह हमारे नबी ﷺ की हर हर सुन्नत में हज़ारों हज़ार फ़ायदे छुपे हुए हैं जिनमें से कुछ तो साईंस ने अभी बयान किए हैं और बहुत कुछ अभी बयान करने को बाक़ी हैं।

## इस्लाम की तीसरी ख़ूबी

(3) इस्लाम की तीसरी ख़ूबी येह है कि बिलाशुबा इस्लाम ने हर ख़ैर और भलाई का हुक्म दिया और हर बुराई और शर से रोका है।

इस्लाम ने अच्छे आदाब और अच्छे अख्लाक़ अपनाने का हुक्म दिया है मिसाल के तौर पर सिदक़, सच्चाई, हिल्म व बुर्दबारी, रिक़्क़त व नरमी, आजिज़ी व इन्किसारी, तवाज़ोअ, शर्मो हया, अहदो वफ़ादारी, वक़ार व हिल्म, बहादुरी व शुजाअत, सब्र व तहम्मुल, मुहब्बत व उल्फत, अद्ल व

इन्साफ़, रहम व मेहरबानी, रज़ामंदी व क़नाअत, इफ़्फ़त व इस्मत, एहसान, दर गुज़र और माफ़ी, अमानतो दियानत, नेकी का शुक्रिया अदा करना, और ग़ुस्से को पी जाना, हर एक के हुक़ूक़ की अदायगी करने और उस की हक़ तलफ़ी से बचने का हुक्म दिया है।

और इस्लाम ने अल्लाह पाक के साथ शिर्क और ग़ैरुल्लाह की इबादत करने से लेकर हर बुराई से मना किया है, मसलन चोरी, जुआ, शराब नोशी, झूट, ग़ीबत, चुग़ुली, वादा ख़िलाफ़ी, गाली ग्लोच, फ़ुहश व उर्यानी, सूद, रिशवत, धोका, बद निगाही करना, किसी अजनबी औरत को देखना, माँ बाप की ना फ़रमानी, क़त्ल व ग़ारतगरी वग़ैरा, बल्कि यूं कह लीजिए कि दुनिया की कोई ऐसी बुराई नहीं जिससे इस्लाम ने अपने मानने वालों को मना ना फ़रमाया हो, बल्कि करना तो दूर की बात बुराई के क़रीब जाने से मना किया है, चुनांचे पारा 8 सूरए अन्आम की आयत नंबर 151 में इरशाद हुआ:

وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ۔ (پ۸، الانعام، ۱۵۱)

**तर्जमा ए कंज़ुल ईमान:** और बे हयाइयों के पास ना जाओ जो उन में खुली हैं और जो छुपी।

## इस्लाम की चौथी ख़ूबी

(4) इस्लाम की चौथी ख़ूबी येह है कि इस्लाम के पास ऐसी किताब है जिसके जैसी कोई किताब नहीं, और वो क़ुरआने पाक है मिसाल के तौर पर:

(1) क़ुरआने पाक जैसी कोई किताब बना नहीं सकता।

(2) क़ुरआने पाक को कोई बदल नहीं सकता।

(3) क़ुरआने पाक को कोई ख़त्म नहीं कर सकता।

(4) क़ुरआने पाक को अल्लाह पाक ने येह अज़मत दी है कि उस को

देखना इबादत, उस को छूना इबादत, उस को पढ़ना इबादत, उस को सुनना इबादत, जिस मक़सद के लिए पढ़ो वो मक़सद पूरा हो।

## क़ुरआन की अज़मत

(1) दुनिया में कोई ऐसी किताब नहीं जिस में हर चीज़ का बयान मौजूद हो।

(2) दुनिया में कोई ऐसी किताब नहीं जो हर हाल में पढ़ी जाती हो।

(3) दुनिया में कोई ऐसी किताब नहीं जो हर एक के लिए फ़ाइदे मंद हो।

(4) दुनिया में कोई ऐसी किताब नहीं जिसको हर कोई पढ़ता हो।

सिर्फ क़ुरआन ही वो किताब है जिसको अल्लाह पाक ने हर किस्म की ख़ूबियों से माला माल किया है और ऐसा क्यों ना हो कि वो अल्लाह पाक का मुक़द्दस कलाम है।

(1) क़ुरआने पाक ही वो किताब है जिसमें हर खुश्क व तर, बहर व बर, गुल व समर का बयान है।

(2) क़ुरआने पाक ही वो किताब है जिसको हर हाल में पढ़ा जाता है चाहे वो ख़ुशी का माहौल हो या ग़मी का।

(3) क़ुरआने पाक ही वो किताब है जो हर एक के लिए फ़ाइदेमंद है।

(4) क़ुरआने पाक ही वो किताब है जिसको हर कोई पढ़ता है, क्योंकि दुनिया में कोई ऐसी किताब नहीं है जिसको बच्चा भी पढ़ता हो, जिसको जवान भी पढ़ता हो, जिसको बूढ़ा भी पढ़ता हो, जिसको मर्द भी पढ़ता हो, जिसको औरत भी पढ़ती हो, जिसको सेठ भी पढ़ता हो, जिसको नौकर भी पढ़ता हो, जिसको अमीर भी पढ़ता हो, जिसको ग़रीब भी पढ़ता हो, जिसको दीन दार भी पढ़ता हो, जिसको दुनियादार भी पढ़ता हो, जिसको डॉक्टर भी पढ़ता हो, जिसको इनजीनियर भी पढ़ता हो, जिसको मुलाज़िम भी पढ़ता हो,

जिसको वज़ीर भी पढ़ता हो, जिसको बादशाह भी पढ़ता हो, जिसको वली भी पढ़ता हो, जिसको ग़ौस भी पढ़ता हो, जिसको अब्दाल भी पढ़ता हो, जिसको क़ुतुब भी पढ़ता हो, जिसको सहाबी भी पढ़ता हो, जिसको नबी भी पढ़ता हो।

**अल्लाहु अकबर!** दुनिया में कोई ऐसी किताब नहीं जिसको अरबी जानने वाला भी पढ़ता हो, जिसको फ़ारसी जानने वाला भी पढ़ता हो, जिसको उर्दू जानने वाला भी पढ़ता हो, जिसको हिन्दी जानने वाला भी पढ़ता हो, जिसको इंग्लिश जानने वाला भी पढ़ता हो, जिसको मराठी जानने वाला भी पढ़ता हो, जिसको गुजराती जानने वाला भी पढ़ता हो, जिसको बंगला जानने वाला भी पढ़ता हो।

दुनिया में आपको कोई ऐसी किताब नहीं मिलेगी जिसको हर कोई पढ़ता हो, हर ज़बान जानने वाला पढ़ता हो , येह ए'जाज़ और मर्तबा सिर्फ और सिर्फ क़ुरआन को हासिल है कि उस को हर कोई पढ़ रहा है।

बच्चे भी पढ़ रहे हैं, जवान भी पढ़ रहे हैं, बूढ़े भी पढ़ रहे हैं, मर्द भी पढ़ रहे हैं, औरतें भी पढ़ रही हैं, अमीर भी पढ़ रहे हैं, ग़रीब भी पढ़ रहे हैं, दीनी लाईन वाले भी पढ़ रहे हैं, दुन्यवी लाईन वाले भी पढ़ रहे हैं, हर तबक़े से तअल्लुक़ रखने वाले पढ़ रहे हैं।

अरबी जानने वाला भी पढ़ रहा है, फ़ारसी जानने वाला भी पढ़ रहा है, उर्दू जानने वाला भी पढ़ रहा है, हिन्दी जानने वाला भी पढ़ रहा है, मराठी जानने वाला भी पढ़ रहा है, गुजराती जानने वाला भी पढ़ रहा है, बंगला जानने वाला भी पढ़ रहा है, इंग्लिश जानने वाला भी पढ़ रहा है, चीनी जानने वाला भी पढ़ रहा है।

अपनी मादरी ज़बान में लिखी हुई किताब पढ़ पाता हो या ना पढ़ पाता हो मगर क़ुरआन ज़रूर पढ़ रहा है। और लुत्फ़ की बात येह कि जिस को पढ़ना आता है वो तो पढ़ रहा है हद तो येह है कि जिस को पढ़ना नहीं आता वो भी

क़ुरआन को खोल कर देख रहा है और अपनी प्यास बुझा रहा है। **अल्लाहु अकबर!**

## दो अजीब बातें

फिर एक अजीब बात और, कि दुनिया की कोई सी भी किताब हो आदमी एक बार पढ़ कर उकता जाता है दोबारा पढ़ने को कहो, तो पढ़ने के लिए तैयार नहीं होता मगर क़ुर्बान जाईए अल्लाह पाक के कलाम पर, क़ुरआने पाक को एक बार पढ़ कर फिर दोबारा पढ़ा जा रहा है, कोई उकताहट, कोई मलाल नहीं, बल्कि अपना शर्फ़ समझा जा रहा है कि मुझे दोबारा पढ़ने की सआदत मिल रही है।

और दूसरी अजीब बात, दुनिया की कोई सी भी किताब पढ़ते वक़्त आदमी हिलता नहीं, झूमता नहीं, मगर अजीब बात है कि जब क़ुरआन पढ़ने लगता है तो हिलने लगता है, झूमने लगता है, आख़िर क़ुरआने पाक में क्या बात है कि पढ़ने वाला हिलने लगता है ?

बुज़ुरगाने दीन फ़रमाते हैं दर अस्ल बात येह है कि जब कोई क़ुरआन पढ़ता है तो अल्लाह पाक की रहमतों का नुज़ूल उस के दिल पर होता है जिसका ज़हूर बदन के हिलने से होता, अल्लाहु अकबर! क्या शान है क़ुरआने पाक की, अल्लाह पाक हम सबको क़ुरआने पाक की बरकतों से माला माल फ़रमाए, आमीन।

## इस्लाम की पांचवीं ख़ूबी

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** इस्लाम की पांचवीं ख़ूबी येह है कि इस्लाम में मुकम्मल ज़ाबिता ए हयात यानी ज़िंदगी गुज़ारने का मुकम्मल तरीका मौजूद है, कि बच्चे के पैदा होने से लेकर उस के मरने तक तमाम मसाइल का हल मौजूद है।

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** येह है हमारा इस्लाम, सबसे आ'ला, सबसे अफ़ज़ल हमारा इस्लाम, लेकिन आज हम अपने इस्लाम और उस की ता'लीम से बहुत दूर जा चुके हैं, छोटे से छोटे फंक्शन से लेकर बड़े बड़े प्रोग्राम तक, शादी की ख़ुशी से लेकर फ़ौतगी की ग़मी तक, हमारा कोई काम इस्लामी ता'लीमात के मुताबिक़ नहीं होता

आह! इस्लाम तेरे चाहने वाले ना रहे
जिनका तू चाँद था अफ़सोस वो हाले ना रहे
ऐ खासए ख़ासाने रुसुल वक़्ते दुआ है
उम्मत पे तेरी आके अजब वक़्त पड़ा है
जो दीन बड़ी शान से निकला था वतन से
परदेस में वो आज ग़रीबुल ग़ु-रबा है
वो दीन हुई बज़्मे जहां जिससे फ़रोज़ां
अब उस की मजालिस में ना बत्ती ना दिया है
डर है कहीं येह नाम भी मिट जाये ना आखिर
मुद्दत से इसे दौरे ज़माँ मेट रहा है
फ़र्याद है ऐ कश्तिए उम्मत के निगहबां
बेड़ा येह तबाही के क़रीब आन लगा है
कर हक़ से दुआ उम्मते मरहूम के हक़ में
ख़तरों में बहुत इस का जहाज़ आके घिरा है
उम्मत में तेरी नेक भी हैं बद भी हैं लेकिन
दिलदादा तेरा एक से एक उनमें सिवा है
कल देखिए पेश आए ग़ुलामों को तेरे क्या
अब तक तो तेरे नाम पे एक एक फ़िदा है

हम नेक हैं या बद हैं बिलआख़िर हैं तुम्हारे
निस्बत बहुत अच्छी है अगर हाल बुरा है
तदबीर सँभलने की हमारे नहीं कोई
हाँ! एक दुआ तेरी कि मक़बूले ख़ुदा है

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** आ जाएं अब अमल की जानिब, आ जाएं अपने रब की रहमत की जानिब, छोड़ दें सारे गुनाहों के काम, छोड़ दें अपने रब की ना फ़रमानियां, छोड़ दें शैतान की पैरवी, पता नहीं कब किस की ज़िंदगी का चराग़ गुल हो जाये, पता नहीं कब किस को मौत आ जाये, अगर बिग़ैर तौबा किए मौत आ गई तो हलाकत ही हलाकत होगी, यक़ीनन अल्लाह पाक का अज़ाब निहायत सख़्त है और उसने मुजरिमीन व ज़ालिमीन के लिए जहन्नम भी तैयार कर रखी है जिसका तज़्किरा ही डरा देने के लिए काफ़ी है चुनांचे:

## अज़ाबे जहन्नम का तज़्किरा

तबरानी ने औसत में रिवायत की है कि एक मर्तबा हज़रते जिब्रील علیہ السلام ऐसे वक़्त में तशरीफ़ लाए कि उस वक़्त में उस से पहले नहीं आते थे, हुज़ूर ﷺ खड़े हो गए और फ़रमाया जिब्रील क्या बात है ? मैं तुमको मुतग़य्यर यानी बदला हुआ देख रहा हूँ ? जिब्रील علیہ السلام ने अर्ज़ की मैं इस वक़्त आपके पास आया हूँ जबकि अल्लाह पाक ने **जहन्नम** को दहका देने का हुक्म दिया है, आपने फ़रमाया जिब्रील मुझे उस आग या जहन्नम के बारे में बतलाओ जिब्रील علیہ السلامने अर्ज़ की कि अल्लाह पाक ने '**जहन्नम**' को हुक्म दिया और उस में एक हज़ार साल तक आग दहकाई गई यहां तक कि वो सफ़ैद हो गई, फिर उसे हज़ार साल तक दहकाया गया यहां तक कि वो सुर्ख़ यानी लाल हो गई, फिर उसे अल्लाह पाक के हुक्म से हज़ार साल तक और भड़काया गया यहां तक कि वो बिल्कुल स्याह (यानी काली) हो गई,

अब वो स्याह और तारीक है, ना उस में चिंगारी रौशन होती है और ना ही उस का भड़कना ख़त्म होता है और ना उस के शोले बुझते हैं।

उस ज़ात की क़सम जिसने आप ﷺ को नबिये बरहक़ बना कर मबऊस फरमाया यानी भेजा है, अगर सूई के नाके के बराबर भी जहन्नम को खोल दिया जाये तो तमाम ज़मीन वाले फ़ना हो जाएं, और क़सम है उस ज़ात की जिसने आप ﷺ को हक़ के साथ भेजा, अगर जहन्नम के फ़रिश्तों में से एक फ़रिश्ता दुनिया वालों पर ज़ाहिर हो जाए तो ज़मीन की तमाम मख़लूक़ उस की बदसूरती और बदबू की वजह से हलाक हो जाएगी, और क़सम है उस ज़ात की जिसने आप ﷺ को हक़ के साथ मबऊस फ़रमाया, अगर जहन्नम की ज़ंजीरों का एक हल्क़ा 'जिसका अल्लाह ने क़ुरआने करीम में ज़िक्र किया है' दुनिया के पहाड़ों पर रख दिया जाये तो वो रेज़ा रेज़ा हो जाएं और वो हल्क़ा 'तहतुस्सरा' यानी सातवीं ज़मीन मे जा ठहरे, हुज़ूर ﷺ ने येह सुनकर फ़रमाया : बस जिब्रील बस, इतना तज़्किरा ही काफ़ी है, मेरे लिए येह बात इंतिहाई परेशान कुन है।

रावी कहते हैं कि तब हुज़ूर ﷺ ने जिब्रील को देखा वो रो रहे हैं , आप ﷺ ने फ़रमाया जिब्रील तुम क्यों रोते हो हालाँकि तुम्हारा तो अल्लाह पाक के यहाँ बहुत बड़ा मक़ाम है, जिब्रील ने कहा मैं क्यों ना रोऊ ? मैं ही रोने का ज़्यादा हक़दार हूँ, क्या ख़बर अल्लाह पाक के इल्म में मेरा इस मक़ाम के इलावा कोई और मक़ाम हों! क्या ख़बर कहीं मुझे इब्लीस की तरह ना आज़माया जाये वो भी तो फ़रिश्तों में रहता था। और क्या ख़बर मुझे हारूत व मारूत की तरह आज़माईश में ना डाल दिया जाये। तब हुज़ूर ﷺ और जिब्रील علیہ السلام दोनों अश्कबार हो गए और येह अश्कबारी बराबर जारी रही यहां तक कि आवाज़ आई :

'ऐ जिब्रील ! ऐ मुहम्मद ! अल्लाह ने तुम दोनों को अपनी ना फ़रमानी

से महफ़ूज़ कर लिया है' पस उस के बाद जिब्रील علیہ السلام आसमानों की तरफ़ परवाज़ कर गए।

हुज़ूर ﷺ का गुज़र अंसार की एक जमाअत से हुआ जो हंस रहे थे और फ़ुज़ूल बातों में मसरूफ़ थे, आप ﷺ ने फ़रमाया तुम हंसते हो हालाँकि तुम्हारे पीछे जहन्नम है, जिसे मैं जानता हूँ, अगर तुम जानते तो कम हंसते और ज़्यादा रोते, तुम खाना पीना छोड़ देते और पहाड़ों की तरफ़ निकल जाते और इंतिहाई मसाइब यानी परेशानियाँ बर्दाश्त कर के अल्लाह की इबादत करते।

उस वक़्त अल्लाह की तरफ़ से निदा आई कि ऐ मुहम्मद ! (ﷺ) मेरे बंदों को नाउम्मीद ना करो, आप ख़ुशख़बरी देने वाले बनाकर भेजे गए हैं, लोगों को मुसीबतों में डालने वाले बनाकर नहीं भेजे गए, पस रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि राहे रास्त पर गामज़न रहो और रहमते ख़ुदावंदी से उम्मीद रखो।

(المعجم الاوسط، ۲/۷۸، الحدیث ۲۵۸۳)

मुस्नदे अहमद की रिवायत है हुज़ूर ﷺ ने जिब्रील से फ़रमाया : मैंने कभी भी मीकाईल को हंसते हुए नहीं देखा, इस की क्या वजह है ? जिब्रील علیہ السلام ने कहा कि जब से जहन्नम को पैदा किया गया है मीकाईल علیہ السلام कभी नहीं मुस्कुराए।(مسند احمد، مسند انس بن مالک بن النضر، ۴/۴۴۷، الحدیث ۱۳۳۴۲)

**ऐ आशिक़ाने रसूल !** येह उन हज़रात का हाल है जो बख़्शे बख्शाए हैं और उनके सदक़े ना जाने कितनों की बख्शिश होगी, और एक हमारा हाल है कि रात दिन गुनाह करने के बावजूद ना ख़ौफे ख़ुदा से रोना है और ना अपने किए पर पछताना है, लिहाज़ा आईए तौबा कीजिए कि इंशाअल्लाह आज से नेक बनूँगा, नेकों की सोहबत इख्तियार करूँगा, आज से नमाज़ें नहीं छोड़ूँगा, आज से महबूब ﷺ की सुन्नतों पर अमल करूँगा, गुनाहों वाले सारे काम छोड़ दूँगा।

दिन लहव में खोना तुझे शब नींद भर सोना तुझे
शरमे नबी खौफ़े ख़ुदा येह भी नहीं वो भी नहीं

## (7)मुसलमानों से दर्द मंदाना अपील

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** अल्लाह पाक ने हमें बिग़ैर क़ुर्बानी पेश किए, घर बैठे, मुफ़्त में ईमान की अज़ीम दौलत से माला माल फ़रमाया है, उस पर हमें अल्लाह पाक का शुक्र अदा करना चाहिए और हमेशा ईमान पर साबित क़दम रहने की दुआ करते रहना चाहिए, यक़ीनन क़ब्रो आख़िरत की तमाम राहत सिर्फ और सिर्फ उसी के लिए हैं जो दुनिया से अपना ईमान सलामत ले जाने में कामयाब होगा जैसा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :

"مَنْ قَالَ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہُ دَخَلَ الْجَنَّۃَ"

**तर्जमा:** जिसने कलिमए तय्यिबा 'لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہُ' {ला इलाहा इल्लल्लाह}पढ़ लिया वो जन्नत में दाख़िल हो गया।

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ﷺ ने फ़रमाया, ' बेशक अल्लाह पाक के अर्श के सामने नूर का एक सुतून यानी पिलर है, जब बंदा لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہُ {ला इलाहा इल्लल्लाह} कहता है तो वो सुतून यानी पिलर हिलने लगता है, अल्लाह पाक उस से फ़रमाता है, 'ठहर जा' वो अर्ज़ करता है: मैं कैसे ठहरूं हालाँकि तूने इस कलिमा पढ़ने वाले की मग़फ़िरत नहीं फ़रमाई।"तो अल्लाह पाक फ़रमाता है, 'बेशक मैंने उस की मग़फ़िरत फ़रमा दी तो फिर वो सुतून ठहर जाता है।

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی فضل لا الہ الا اللہ، رقم ۱۶۸۰۴، ج۱۰، ص۸۸)

और क़ुरआने पाक के पारा 18 सूरए मोमिनून की आयत नंबर एक में अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

قَدۡ اَفۡلَحَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ۙ﴿۱﴾

**तर्जमा ए कंज़ुल ईमान:** बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले

और फ़लाह दुनिया व आख़िरत दोनों की कामयाबी को कहते हैं लिहाज़ा अल्लाह पाक के इस फ़रमान से पता चला कि मोमिन दुनिया और आख़िरत दोनों जहान में कामयाब है।

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** मेरे शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इलयास अत्तार कादरी रज़वी ज़ियाई ज़ीदा मज्दुहू अपनी माया नाज़ किताब 'कुफ़रिया कलिमात के बारे में सवाल जवाब' में लिखते हैं इस में कोई शक नहीं कि हम मुसलमान हैं मगर हम में से किसी के पास इस बात की कोई ज़मानत नहीं कि वो मरते दम तक मुसलमान ही रहेगा, जिस तरह बे शुमार कुफ़्फ़ार ख़ुश क़िस्मती से मुसलमान हो जाते हैं इसी तरह कई बद नसीब मुसलमानों का मआज़ल्लाह ईमान से फिर कर कुफ्र में चला जाना भी साबित है और जो ईमान से फिर कर यानी मुरतद हो कर मरेगा वो हमेशा हमेशा के लिए दोज़ख़ में रहेगा, चुनांचे पारा 2 सूरए बक़रह आयत नंबर 217 में अल्लाह पाक का फरमान है :

وَمَنۡ یَّرۡتَدِدۡ مِنۡكُمۡ عَنۡ دِیۡنِهٖ فَیَمُتۡ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتۡ اَعۡمَالُهُمۡ فِی الدُّنۡیَا وَالۡاٰخِرَةِ ۚ وَ

اُولٰٓئِكَ اَصۡحٰبُ النَّارِ ۚ هُمۡ فِیۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿۲۱۷﴾ (پ۲،البقرۃ۲۱۷)

**तर्जमा ए कंज़ुल ईमान:** और तुम में जो कोई अपने दीन से फिरे, फिर काफ़िर हो कर मरे, तो उन लोगों का किया अकारत गया दुनिया में और आख़िरत में, और वो दोज़ख़ वाले हैं, उन्हें उस में हमेशा रहना।

ईमां पे रब्बे रहमत, दे दे तू इस्तिक़ामत
देता हूँ वास्ता मैं तुझ को तेरे नबी का

## ना जाने हमारा ख़ातिमा कैसा हो ?

एक तवील हदीसे पाक में अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ﷺ ने येह भी इरशाद फ़रमाया: आदम की औलाद मुख़्तलिफ़ तबक़ात पर पैदा की गई, उनमें से बा'ज़ मोमिन पैदा हुए, हालते ईमान पर ज़िंदा रहे और मोमिन ही मरेंगे, बा'ज़ काफ़िर पैदा हुए, हालते कुफ़्र पर ज़िंदा रहे और काफ़िर ही मरेंगे, जबकि बा'ज़ मोमिन पैदा हुए, मोमिनाना ज़िंदगी गुज़ारी और कुफ़्र की हालत पर रुख़स्त हुए यानी मरे, बा'ज़ काफ़िर पैदा हुए, काफ़िर ज़िंदा रहे और मोमिन हो कर मरेंगे।(سُنَنُ التّرمذی ج۴ص۸۱حدیث۲۱۹۸)

## शैतान अज़ीज़ों के रूप में ईमान छीनने आएगा

**ऐ आशिक़ाने रसूल !** दुनिया में आकर हम मुसलमान तो हो गए मगर अब दुनिया से ईमान को सलामत ले जाने के लिए सख़्त दुशवार गुज़ार घाटियों से गुज़रना होगा और फिर भी कुछ नहीं मा'लूम कि ख़ातिमा कैसा होगा ? आह! आह! आह! मौत के वक़्त ईमान छीनने के लिए शैतान तरह तरह के हथकंडे इस्ति'माल करता है यहां तक कि माँ बाप का रूप धार कर भी ईमान पर डाके डालता है और यहूद व नसारा को दुरुस्त साबित करने की बुरी कोशिश करता है, यक़ीनन वो ऐसा नाज़ुक मौक़ा होता है कि बस जिस पर अल्लाह पाक का ख़ास करम व एहसान होता है वही कामयाब व कामरान होता है और उसी का ईमान सलामत रहता है।

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान علیہ الرحمہ फ़तावा रज़विया जिल्द 9 सफा 83 पर फ़रमाते हैं: कि इमाम इब्नुल हाज मक्की علیہ الرحمہ 'मदखल' में फ़रमाते हैं: कि दमे नज़अ यानी मौत के वक़्त दो शैतान, आदमी के दोनों पहलू पर आकर बैठते हैं एक उस के बाप की शक्ल बन कर, दूसरा माँ की, एक कहता है : वो शख़्स

यहूदी हो कर मरा तू (भी) यहूदी हो जा कि यहूद वहां बड़े चैन से हैं, दूसरा कहता है वो शख़्स नसरानी (यानी क्रिस्चियन) हो कर दुनिया से गया तू भी नसरानी (क्रिस्चियन) हो जा कि नसारा (क्रिस्चियन) वहां बड़े आराम से हैं।

(المدخل لابن الحاج ج۳ص ص۱۸۱)

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** वाक़ई मुआमला बड़ा नाज़ुक है, इसी लिए ईमान के बर्बाद हो जाने के ख़ौफ़ से डरने वालों के दिल टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं।

फ़िक्रे मआश बद बला हौले मआद जां गुज़ा
लाखों बला में फंसने को रूह बदन में आई क्यों

## काबिले रश्क़ वही है जो क़ब्र के अंदर मोमिन है

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** दुनिया में जीते जी मोमिन होना यक़ीनन सआदत की बात है मगर येह सआदत हक़ीक़त में उसी सूरत में सआदत है कि दुनिया से रुख्सत होते वक़्त ईमान सलामत रहे, ख़ुदा की क़सम! काबिले रश्क़ वही है जो कब के अंदर भी मोमिन है, जी हाँ! जो दुनिया से ईमान सलामत ले जाने में कामयाब हुआ वही हक़ीक़ी मा'नों में कामयाब और जो जन्नत को पा ले वही बा मुराद है, चुनांचे पारा 4 सूरए आले इमरान आयत नंबर 185 में इरशाद होता है।

فَمَنۡ زُحۡزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدۡخِلَ الۡجَنَّةَ فَقَدۡ فَازَ ؕ وَمَا الۡحَيٰوةُ الدُّنۡيَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الۡغُرُوۡرِ ﴿۱۸۵﴾

**तर्जमा ए कंज़ुल ईमान:** जो आग से बचा कर जन्नत में दाखिल किया गया वो मुराद को पहुँचा और दुनिया की ज़िंदगी तो यही धोके का माल है।

## बुरी सोहबत ईमान के लिए ख़तरनाक है

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** ईमान को अपना सबसे क़ीमती सरमाया जानिए, और उस की सलामती की फ़िक्र हमेशा कीजिए और जिन चीज़ों से

येह नेअमत छिन जाती है उन चीज़ों से दूर रहने की कोशिश कीजिए , यक़ीनन ग़ैर मुस्लिमों और बुरे दोस्तों से दूरी बनाइए कि बुरी सोहबत ईमान के लिए बहुत ख़तरनाक है, अफ़सोस सद करोड़ अफ़सोस इस के बावजूद हम ग़ैर मुस्लिमों और बुरे दोस्तों की बुरी दोस्ती से नहीं रुकते, आह बुरी सोहबत की नुहूसत ऐसी छाई है कि लम्हा भर के लिए भी तन्हाई में अल्लाह पाक को याद करने का जी नहीं चाहता।

**याद रखिए!** बुरा दोस्त ईमान के लिए नुक़्सान का सबब साबित हो सकता है, हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा ﷺ का फरमाने इबरत निशान है "आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है उसे येह देखना चाहिए कि किस से दोस्ती करता है।(مُسند امام احمد ج۳ص۱۲۹-۱۲۸حدیث ۸۰۳۴)

हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान علیہ الرحمہ इस हदीस पाक के तहत फ़रमाते हैं यानी किसी से दोस्ताना करने से पहले उसे जांच लो कि अल्लाह व रसूल ﷺ का मुतीअ (यानी फ़र्मांबरदार) है या नहीं अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

وَكُونُوا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۹﴾

**तर्जमा ए कंज़ुल ईमान:** और सच्चों के साथ हो। (پ۱۱،التوبۃ:۱۱۹)

सूफिया फ़रमाते हैं कि इन्सानी तबीअत में अख़ज़ यानी ले लेने की ख़ासिय्यत है, हरीस यानी लालची की सोहबत से हिर्स यानी लालच, ज़ाहिद की सोहबत से ज़ुहद व तक़वा मिलेगा। (مراٰۃالمناجیح ج۶ص۵۹۹)

## ईमान की हिफ़ाज़त के लिए अलग थलग रहने वाला

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** हमें अपने ईमान की फ़िक्र किस तरह करनी चाहिए इस को इस बात से समझने की कोशिश कीजिए कि एक शख़्स सबसे अलग थलग रहता था, हज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رضی اللہ عنہ ने उस के पास

तशरीफ़ ला कर जब इस का सबब पूछा तो उस ने कहा: 'मेरे दिल में येह ख़ौफ़ बैठ गया है कि कहीं ऐसा ना हो मेरा ईमान छिन जाये और मुझे उस की ख़बर तक ना हो। (قُوتُ القلوب ج۱ص۴۶۸ مُلَخَّصاً)

**अल्लाहु अकबर!** ईमान के छिन जाने का कैसा ख़ौफ़, अल्लाह पाक उनके सदक़े हमें भी अपने ईमान की फ़िक्र नसीब फ़रमाए, आमीन।

**ऐ आशिक़ाने रसूल !** इन तमाम बातों से यही सीखने को मिलता है कि बुरे दोस्तों से दूर रहा जाए। और आज के दौर में बुरे दोस्तों में से एक बहुत ही बुरा दोस्त मोबाईल है। इंसानी दोस्त हर वक़्त हमारे साथ नहीं रहते मगर मोबाईल हमारे पास हर वक़्त रहता है। आज दुनिया में गुनाहों की आग लगाने वालों में से सब से ज़्यादा आग मोबाईल लगा रहा है। लिहाज़ा जितना हो सके इस दुश्मन को अपने से दूर रखा जाए।

## ईमान लूटने के लिए छीना झपटी

**ऐ आशिक़ाने रसूल !** आह! ना जाने हमारा क्या बनेगा! मौत लम्हा ब लम्हा क़रीब आ रही है, क़ब्र की मंज़िल की जानिब बराबर आगे कूच यानी सफर जारी है, तसव्वुर कीजिए कि हम गोया बड़ी ऐहतियात के साथ ईमान को हिफ़ाज़त के साथ सीने से चिमटाये हुए हैं, एक तरफ़ नफ़से अम्मारा ईमान पर झपट रहा है, तो दूसरी तरफ़ शैतान पैंतरे बदल बदल कर वार कर रहा है, तीसरी तरफ़ बद मज़हब ईमान पर कमंदे यानी फंदा डालने में मसरूफ़ हैं तो चौथी तरफ़ से दुनिया की बेजा मुहब्बत ईमान के दर पै है। यानी यूं समझिए कि कोई हाथ मरोड़ रहा है, कोई टांग खींच रहा है, कोई मुक्के रसीद कर रहा है, कोई लातें उछाल रहा है, हर एक पूरा ज़ोर लगा रहा है कि किसी तरह हमसे ईमान छीन ले, आह! इस हालत में ईमान की दौलत को सलामत लेकर क़ब्र में कैसे दाखिल होंगे।

महबूबे ख़ुदा सर पे अजल आ के खड़ी है
शैतान से अत्तार का ईमान बचा लो

## ईमान के छिन जाने की फ़िक्र में रात भर रोते रहे

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** औलियाए किराम ईमान छिन जाने के ख़ौफ़ से लर्ज़ां व तरसाँ रहा करते थे चुनांचे : हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात علیہ الرحمہ फ़रमाते हैं मैं एक दफ़ा हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी علیہ الرحمہ के पास हाज़िर हुआ, आप علیہ الرحمہ सारी रात रोते रहे, मैंने पूछा क्या आप गुनाहों के ख़ौफ़ से रो रहे हैं ? तो आप ने एक तिनका उठाया और फ़रमाया कि गुनाह तो अल्लाह पाक की बारगाह में उस तिन्के से भी कम हैसियत रखते हैं, मुझे तो इस बात का ख़ौफ़ है कि कहीं ईमान की दौलत ना छिन जाये।

(منهاج العابدين ص١٦٩)

मुसलमाँ है अत्तार तेरी अता से
हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

## सुब्ह मोमिन तो शाम को काफ़िर

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** आजकल का दौर बड़ा नाज़ुक दौर है, फ़ित्नों से भरा हुआ दौर है, इस दौर की पेशन गोई करते हुए हमारे प्यारे नबी ﷺ ने हमें पहले ही आगाह फ़रमा दिया है चुनांचे: हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से मरवी है, अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ﷺ का इरशाद है: 'इन फ़ित्नों से पहले नेक आ'माल के सिलसिले में जल्दी करो जो तारीक यानी अंधेरी रात के हिस्सों की तरह होंगे, एक आदमी सुब्ह को मोमिन होगा और शाम को काफ़िर होगा और शाम को मोमिन होगा और सुब्ह काफ़िर होगा, नीज़ अपने दीन को दुन्यवी साज़ो सामान के बदले बेच देगा।(صحیح مُسلِم حدیث١١٨ص٧٣)

हैं ग़ुलाम आपके जितने करो दूर उन से फ़ित्ने
बुरी मौत से बचाना मदनी मदीने वाले

## इस्लाम की मिठास पाएगा

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** अपने ईमान की अहमियत को समझने की कोशिश कीजिए और कुफ्र से बचते रहिये यक़ीनन इस्लाम रौशनी है और कुफ्र अंधेरा, इस्लाम पाकी है और कुफ्र नापाकी, और एक अक़्लमंद इन्सान रौशनी की तरफ़ जाता और अंधेरे से दूर भागता है, पाकी इख्तियार करता और नापाकी से बचता है, लिहाज़ा इसी तरह हमें भी कुफ्र की नापाकी से बच कर अपने आपको पाक, साफ़ सुथरा रखना है और कुफ्र को इस तरह नापसंद करना है जैसा कि मुस्लिम शरीफ़ की हदीसे पाक में है हज़रत सय्यिदुना अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ से मरवी है, अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ﷺ का फरमाने आलीशान है: 'तीन ख़सलतें यानी आदतें जिस शख़्स में होंगी वो इस्लाम की हलावत यानी मिठास पाएगा :

(1) अल्लाह पाक और उस का रसूल ﷺ उस के नज़्दीक सबसे ज़्यादा महबूब हों।

(2) किसी से मुहब्बत करे तो सिर्फ अल्लाह पाक के लिए करे।

(3) इस्लाम लाने के बाद दोबारा कुफ्र में लौटने को इस तरह नापसंद करे जैसे आग में डाले जाने को नापसंद करता है।'

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان خصال من۔۔۔۔۔۔الخ، الحدیث ۱۶۵، ص ۶۸۷)

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** कुफ्र ऐसा गुनाह है जिसको अल्लाह पाक कभी नहीं माफ़ फ़रमाता चुनांचे क़ुरआने पाक में इरशाद हुआ :

اِنَّ اللّٰهَ لَا یَغْفِرُ اَنْ یُّشْرَكَ بِهٖ وَ یَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ یَّشَآءُۚ-وَ مَنْ یُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰۤى

اِثْمًا عَظِیْمًا (۴۸) (پ۵، النساء، ۴۸)

**तर्जमा ए कंज़ुल ईमान:** बे शक अल्लाह उसे नहीं बख़्शता कि उस के साथ कुफ़्र किया जाये और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे माफ़ फ़रमा देता है और जिसने ख़ुदा का शरीक ठहराया उसने बड़े गुनाह का तूफ़ान बाँधा।

इस आयत के तहत तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में लिखा है: मा'ना येह हैं कि जो कुफ़्र पर मरे उस की बख्शिश नहीं, उस के लिए हमेशगी का अज़ाब है और जिसने कुफ़्र ना किया हो वो ख्वाह कितना ही गुनहगार मुर्तक़िबे कबाइर यानी बड़े गुनाहों को करने वाला हो और बे तौबा भी मर जाये तो उस के लिए ख़ुल्द यानी दोज़ख में हमेशा रहना नहीं है बल्कि उस की मग़फ़िरत अल्लाह की मशीयत में है, चाहे माफ़ फ़रमाए या उस के गुनाहों पर अज़ाब करे फिर अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाए।

## आख़िरी गुज़ारिश

**ऐ आशिक़ाने रसूल!** आपसे आख़िरी गुज़ारिश है कि चाहे कितनी ही मुसीबतों का सामना करना पड़े, कितनी ही तकलीफ़ें बर्दाश्त करनी पड़े, मसाइब व आलाम झेलने पड़े, ग़ुर्बत की ज़िंदगी गुज़ारनी पड़े, सब कुछ कर लीजिएगा लेकिन ईमान का सौदा किसी क़ीमत पर ना कीजिएगा, हमेशा ईमान पर साबित क़दम रहिएगा, क्योंकि हमारे प्यारे नबी ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि दीन पर क़ाइम रहना इतना दुशवार होगा जैसे मुट्ठी में अँगारा लेना, यहां तक कि आदमी क़ब्रिस्तान में जाकर तमन्ना करेगा, कि काश मैं इस क़ब्र में होता। (بہار شریعت، جلد۱،ص۱۱۸)

लिहाज़ा कोई कितनी ही लालच दे, माल व दौलत, हुकूमत व सदारत, ख़ूबसूरत औरत, या किसी भी चीज़ की सहूलत व ऑफ़र दे हरगिज़ हरगिज़ दुन्यवी चीज़ों के बदले ईमान का सौदा मत कीजिएगा, येह ज़िंदगी चार दिन की है, एक दिन सबको मौत आनी है, ख़ुशनसीब वो है जो अपना ईमान

सलामत लेकर जाने में कामयाब हो गया, और गुनाहों से बचते रहिये क्योंकि गुनाहों की नहूसत से भी ईमान छिन जाता है इस बारे में एक दिल हिला देने वाला वाकिआ पढ़िये चुनांचे मेरे शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा मौलाना अबु बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी दामत बरकातुहुमुल आलिया अपने रिसाले {बुरे खात्मे के अस्बाब में लिखते हैं :

## तीन उयूब की नहूसत

"मिन्हाजुल आबिदीन" में है, हज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ अलैहि रहमा अपने एक शागिर्द की मौत के वक़्त तशरीफ़ लाए और उस के पास बैठ कर सूरए यासीन शरीफ़ पढ़ने लगे। तो उस शागिर्द ने कहा: "सूरए यासीन पढ़ना बंद कर दो। "फिर आप अलैहि रहमा ने उसे कलिमा शरीफ़ की तलक़ीन फ़रमाई यानी कालिमा शरीफ पढ़ने को कहा। वो बोला: मैं हरगिज़ येह कलिमा नहीं पढूँगा मैं इस से बेज़ार हूँ। "बस इन्हीं अल्फ़ाज़ पर उस की मौत हो गई। हज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ अलैहि रहमा को अपने शागिर्द के बुरे खात्मे का सख़्त सदमा हुआ। चालीस रोज़ तक अपने घर में बैठे रोते रहे। चालीस दिन के बाद आप अलैहि रहमा ने ख्वाब में देखा कि फ़रिश्ते उस शागिर्द को जहन्नम में घसीट रहे हैं। आप अलैहि रहमा ने उस से पूछा किस सबब से अल्लाह पाक ने तेरी मअरिफ़त सल्ब फ़रमा ली ? मेरे शागिर्दों में तेरा तो मक़ाम बहुत ऊंचा था उस ने जवाब दिया तीन उयूब यानी गुनाहों के सबब से:

(1) **चुग़ली** कि मैं अपने साथियों को कुछ बताता था और आप अलैहि रहमा को कुछ और।

(2) **हसद** कि मैं अपने साथियों से हसद करता था।

(3) **शराब नोशी** कि एक बीमारी से शिफ़ा पाने की ग़र्ज़ से तबीब यानी डॉक्टर के कहने पर हर साल शराब का एक गिलास पीता था।

(मिन्हाजुल आबिदीन, पेज 151)

**ऐ आशिकाने रसूल!** अल्लाह पाक के ख़ौफ़ से लरज़ उठिए! और घबरा कर अपने अल्लाह पाक को राज़ी करने के लिए उस की बारगाहे बेकस पनाह में झुक जाइये। आह! चुग़ली, हसद और शराब नोशी के सबब वलिए कामिल का शागिर्द कुफ़्र के कलिमात बोल कर मरा।

## बुरे खात्मे के चार अस्बाब

शर्हुस्सुदूर में है: बाज़ उलमए किराम रहिमहुमुल्लाहुस्सलाम फ़रमाते हैं: बुरे ख़ात्मे के चार अस्बाब हैं: (1) नमाज़ में सुस्ती करना। (2) शराब नोशी। (3) माँ बाप की ना फ़रमानी करना। (4) मुस्लमानों को तकलीफ़ देना।

(शर्हुस्सुदूर पेज 27)

जो इस्लामी भाई मआज़ल्ला नमाज़ नहीं पढ़ते या क़ज़ा करके पढ़ते हैं, फ़ज्र के लिए नहीं उठते या बिगैर शरई मजबूरी के मस्जिद में बा जमाअत नमाज़ पढ़ने के बजाये घर ही पर नमाज़ पढ़ लेते हैं उन के लिए लम्हए फ़िक्रिया है। कहीं नमाज़ में सुस्ती बुरे ख़ात्मे का सबब ना बन जाये। इसी तरह शराब पीने वाला, माँ बाप का नाफ़रमान और मुस्लमानों को अपनी ज़बान या हाथ वग़ैरा से तकलीफ देने वाला सच्ची तौबा कर ले।

## दिल की बात

**ऐ आशिकाने रसूल!** इस किताब को लिखने का सबब सिर्फ और सिर्फ मुसलमानों को अपने ईमान की हिफ़ाज़त करने और दुनिया से ईमान सलामत ले जाने की सोच देना है। कि

## बुरे खातिमे का ख़ौफ़ न होना

हज़रते अबू दरदा रज़ी अल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं: "जो शख़्स (जीते जी) ईमान के छिन जाने से बे खौफ़ होगा उस का ईमान छिन जाने का शदीद ख़तरा है।" (अज़्ज़ुहद लिइब्निल मुबारक जिल्द 1, पेज 541)

मेरे आका आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान का इर्शाद है, उलमाए किराम फ़रमाते हैं: "जिस को (ज़िन्दगी में) सल्बे ईमान यानी ईमान के छिन जाने का खौफ न हो मरते वक़्त उस का ईमान सल्ब होने (यानी छिन जाने) का अन्देशा है।"(मल्फूज़ाते आला हज़रत, स. 495)

आह! सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है
काश! के मेरी मां ने ही नहीं जना होता

## अच्छे खातिमे के लिये

**ऐ आशिकाने रसूल!** तशवीश, तशवीश, तशवीश निहायत ही सख्त तशवीश की बात है, हम नहीं जानते कि हमारे बारे में अल्लाह पाक की खुफ़्या तदबीर क्या है, न मालूम हमारा खातिमा कैसा होगा ! हुज्जतुल इस्लाम हुज़रते इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली अलैहि रहमा का फ़रमाने आली है : बुरे ख़ातिमे से अम्न चाहते हो तो अपनी सारी ज़िन्दगी अल्लाह पाक की इताअत में बसर करो और हर हर गुनाह से बचो, ज़रूरी है कि तुम पर आरिफ़ीन (यानी बुज़ुर्गाने दीन) जैसा खौफ गालिब रहे यहां तक कि इस के सबब तुम्हारा रोना धोना तवील यानी लम्बा हो जाए और तुम हमेशा ग़मगीन रहो। आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं: तुम्हें अच्छे खातिमे की तैयारी में मश्गूल रहना चाहिये। हमेशा अल्लाह पाक के ज़िक्र में लगे रहो, दिल से दुन्या की मुहब्बत निकाल दो, गुनाहों से अपने आ'ज़ा बल्कि दिल की भी हिफ़ाज़त करो, जिस क़दर मुम्किन हो बुरे लोगों को देखने से भी बचो कि इस से भी दिल पर असर पड़ता है और तुम्हारा ज़ेहन उस तरफ़ माइल हो सकता है।

(اِحیاء العلوم ج ۴ ص ۲۱۹ ۲۲۰ ملخصًا)

मुसल्मां है अत्तार तेरी अता से
हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

**ऐ आशिकाने रसूल!** इमामे गज़ाली अलैहि रहमा की बात पर

तवज्जो कीजिए कि आप ने फरमाया : **(बुरे लोगों को देखने से भी बचो कि इस से भी दिल पर असर पड़ता है और तुम्हारा ज़ेहन उस तरफ़ यानी उनकी बुराई की तरफ माइल हो सकता है)** जब एक बुरे आदमी की येह नहूसत है तो फिर गैर मुस्लिम को देखने, उस से दोस्ती करने और उसके साथ रहने की क्या नहूसत होगी। इसी वजह से एक रिपोर्ट के मुताबिक सन 2000 से 2025 तक दस लाख से ज़्यादा मुस्लिम लड़कियाँ गैर मुस्लिम लड़कों के साथ भाग कर अपना दीन छोड़ दिया और इस्लाम से फिर गईं। ऐसा क्यों और कैसे हुआ ? अगर आप इस पर गौर करेंगे तो आप को इस का बुनियादी सबब दीन से दूरी, अपने दीन के बारे में कोई जानकारी ना होना, दीने इस्लाम की अहमियत, ज़रूरत के बारे में ना जानना और स्कूल, कॉलेज में गैर मुस्लिम लड़कों की दोस्ती को पाएंगे।

**ऐ आशिकाने रसूल!** ऐसी खबरें आप आए दिन सुनते रहते होंगे और वक़्ती तौर पर ग़म भी होता होगा लेकिन इस सैलाब को कैसे रोका जाए ? इस के लिये कोई प्लान नहीं बनाया होगा।

इस किताब को लिखने का मक़सद यही है कि हर मुसलमान तक अपने दीन की खूबियों को पहुंचाया जाए और दीन पर अमल करने की बरकतें और दीन को छोड़ने की नहूसतें बताई जायें ताकि अपने दीनो ईमान की हिफ़ाज़त कर सकें। इसी वजह से इस किताब को उर्दू और हिन्दी दोनों ज़बानों में लिख कर छपवाया गया है लिहाज़ा आप से इल्तिजा है कि इस किताब को घर घर में पहुंचाइए अगर हमारी वजह से किसी का दीन, ईमान बच गया तो यही हमारी नजात का सबब बन सकता है।

अल्लाह पाक हमारी और हमारी आने वाली नस्लों की हिफ़ाज़त फ़रमाए, और आफ़ियत वाली सआदत वाली, ईमान वाली ज़िंदगी और ईमान वाली मौत नसीब फ़रमाए, आमीन।

# रूहानी ईलाज

## मुफ़्लिसी दूर करने का वज़ीफ़ा

**ऐ आशिकाने रसूल!** येह बात ज़ेहेन में बिठा लीजिए कि ब क़दरे किफायत माल कमाना, दूसरों के मोहताज व हाजत मन्द न होने, किसी पर बोझ न बनने और रोज़गार पर लगे रहने की तमन्ना करना बुरा नहीं।

इस तरह की तमन्ना लिये हुए रोज़ी के लिये भाग दौड़ करना, अवरादो वजाइफ़ पढ़ना नेक लोगों का तरीका है जैसा कि हज़रते सय्यिदुना इब्ने शी-रवैह अलैहि रहमा फ़रमाते हैं कि एक दिन अल्लाह के मशहूर व मक्बूल वली हज़रते सय्यिदुना मारूफ़ कर्खी अलैहि रहमा की खिदमते बा ब-र-कत में एक तंगदस्त व मुफ़्लिस शख्स ने अपनी गुरबत यानी गरीबी की शिकायत की। आप अलैहि रहमा ने फ़रमाया : "अल्लाह पाक तुझे अपने हिफ़्ज़ो अमान में रखे, अपने अहलो इयाल यानी घर वालों की तरफ लौट जा और येह अल्फ़ाज़ विर्दे जबां रख यानी पढ़ता रह :

مَا شَآءَ اللّٰہُ کَانَ

**मा शा अल्लाहु काना**

**तर्जमा:**अल्लाह पाक ने जो चाहा वोही हुवा।

वो शख़्स येह विर्द करता हुवा घर की तरफ जा ही रहा था कि रास्ते में उस की मुलाकात एक अन्जान शख्स से हुई जिस ने उस को एक थैली पकड़ाई और चला गया। गरीब शख़्स ने जब थैली खोली तो वो दीनारों यानी सोने के सिक्कों से भरी हुई थी, वो बहुत खुश हुवा और वहीं से वापस पलट कर हज़रते सय्यिदुना मारूफ कर्खी अलैहि रहमा की खिदमत में हाज़िर हो गया ताकि इस पेश आने वाले वाक़िए के बारे में बताए। आप अलैहि रहमा ने उस शख़्स को देखते ही फ़रमाया : ऐ अल्लाह के बन्दे! जब तेरी हाजत पूरी हो गई थी तो

वापस क्यूं आया ? अल्लाह पाक तुझे अपने हिफ़्ज़ो अमान में रखे, अहलो इय़ाल की तरफ़ येह कहते हुए लौट जा :

مَا شَآءَ اللّٰهُ كَانَ

**मा शा अल्लाहु काना**

**तर्जमा:**अल्लाह पाक ने जो चाहा वोही हुवा।

(उयूनुल हिकायात पेज 278)

क्यूं कर न मेरे काम बनें ग़ैब से हसन
बन्दा भी हूं तो कैसे बड़े कारसाज़ का

## रोज़ी में ब-र-कत का बेहतरीन नुस्खा

हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा' द साइदी रज़ी अल्लाहु अनहु बयान करते हैं कि एक शख्स ने हुजूर ﷺ की ख़िदमते बा ब-र-कत में हाज़िर हो कर अपनी गुरबत और तंगदस्ती की शिकायत की। नबिय्ये करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम अपने घर में दाखिल हो तो सलाम करो अगर्चे कोई भी न हो, फिर मुझ पर सलाम भेजो और एक बार सुरए इख्लास शरीफ़ पढ़ो। उस शख़्स ने ऐसा ही किया तो अल्लाह पाक ने उसे इतना मालदार कर दिया कि उसने अपने हम सायों यानी पड़ोसियों और रिश्तेदारों में भी तक्सीम करना शुरू कर दिया।(القول البدیع، الباب الثانی فی ثواب الصلاۃ علی رسول اللہ الخ، ص۲۷۳)

## तंगदस्ती का इलाज

मक-त- बतुल मदीना की मत्बूआ 419 सफहात पर मुश्तमिल किताब “म-दनी पंजसूरह " सफ़हा 246 पर है :

يَا مَلِكُ

या मलिकु

90 बार जो गरीब व नादार रोजाना पढ़ा करे तो अल्लाह ने चाहा तो

गुरबत से नजात पाएगा। (म-दनी पंजसूरह, स. 246 )

## रिज़्क़ में ब-र-कत का वज़ीफ़ा

दावते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की किताब "मल्फ़ूज़ाते आ' ला हज़रत" के सफ़हा 128 पर है : एक सहाबी हुज़ूरﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ की : दुनिया ने मुझ से पीठ फेर ली। फ़रमाया क्या वो तस्बीह तुम्हें याद नहीं जो तस्बीह है फरिश्तों की और जिस की बरकत से रोज़ी दी जाती है। खल्के दुनिया आएगी तेरे पास जलीलो ख़्वार हो कर तुलूए फज्र यानी सहरी का वक़्त खत्म होने के साथ 100 बार कहा कर:

سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ۔ سُبْحٰنَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ۔ وَبِحَمْدِهٖ۔ اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

सुब्हा नल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हा नल्लाहिल अज़ीम
व बिहम्दिही अस्तगफ़िरुल्लाह

उन सहाबी को सात दिन गुज़रे थे कि हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : "हुजूरﷺ! दुनिया मेरे पास इस कसरत से आई, मैं हैरान हूं कहां उठाऊं कहां रखूं !"(लिसानुल मीज़ान जिल्द 4,पेज 304)

## तंगदस्ती और ख़ौफ़ का इलाज

हुज्जतुल इस्लाम हजुरते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गुज़ाली अलैहि रहमा फ़रमाते हैं: खाना खाने के बा'द सूरए इख़्लास और सूरए कुरैश (दोनों सूरतें पढ़े।(इहयाउल उलूम,जिल्द 2,पेज 8)

हज़रते अल्लामा सय्यिद मुर्तज़ा जबीदी अलैहि रहमा इस के तहत लिखते हैं: खाने के बाद सूरए इख्लास पढ़ना हुसूले ब-र-कत के लिये है और सूरए इख्लास पढ़ने से फ़क्र या 'नी तंगदस्ती दूर होती है जब कि सूरए कुरैश पढ़ने से खौफ़ और भूक से अमान हासिल होगी।(ملخص از اتحاف السادة المتقين ج ۵ ص ۵۹۹)

## बीमारी से शिफ़ा का अमल

يَاسَلَامُ

**या सलामु**

111 बार पढ़ कर बीमार पर दम करने से अल्लाह ने चाहा तो शिफ़ा हासिल होगी।

## चोरी से हिफ़ाज़त का अमल

يَاجَلِيْلُ

**या जलीलु**

10 बार पढ़ कर जो अपने माल, असबाब यानी सामान और रक़म वगैरा पर दम कर दे अल्लाह ने चाहा तो चोरी से महफूज़ रहेगा।

## किसी का मोहताज ना होने का अमल

يَاحَكِيْمُ

**या हकीमु**

80 बार जो रोज़ाना पांचों नमाजों के बाद पढ़ लिया करे अल्लाह पाक ने चाहा तो किसी का मोहताज ना होगा।

## बच्चे को फर्माबरदार बनाने का अमल

يَاشَهِيْدُ

**या शहीदु**

21 बार सुब्ह सूरज निकलने से पहले ना फरमान बच्चे या बच्ची की पेशानी पर हाथ रख कर आसमान की तरफ मुँह करके जो पढ़े अल्लाह पाक ने चाहा तो उस का वो बच्चा या बच्ची नेक बने।

# या मुस्तफा अता हो अब इज़्न हाज़िरी का

या मुस्तफा अता हो अब इज़्न हाज़िरी का
कर लूँ नज़ारा आ कर मैं आप की गली का

खुने जिगर से सींचा है बागे सुन्नियत का
कर दो करम वसीला उस मदनी मुर्शिदी का

हों दूर अब बलायें देता हुँ वास्ता मैं
मज़लूमे कर्बला की सरकार बेकसी का

या मुस्तफा गुनाहों की आदतें निकलो
जज़्बा मुझे अता हो सुन्नत की पैरवी का

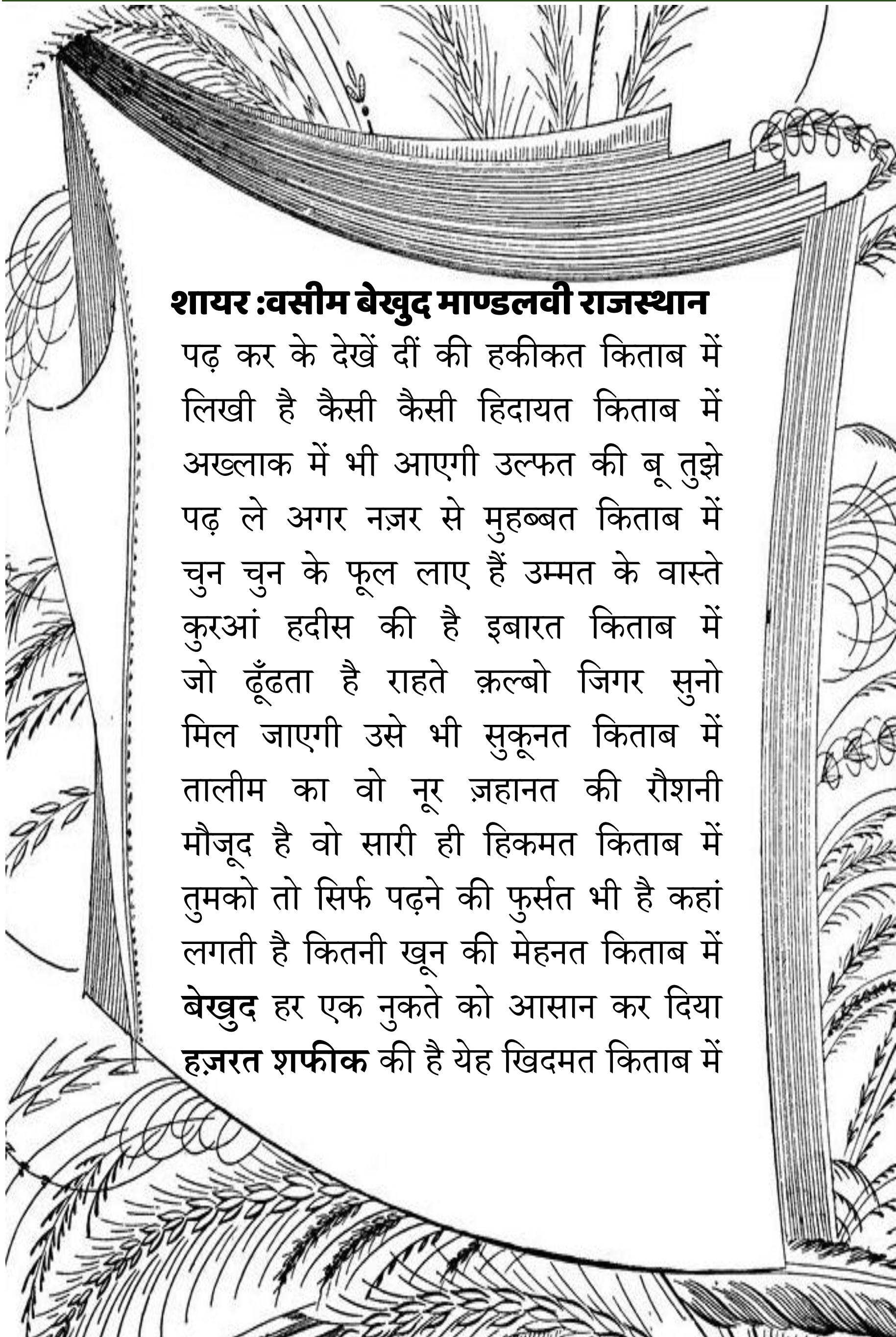
ईमां पे रब्बे रहमत दे दे तू इस्तिकामत
देता हुँ वास्ता मैं तुझ को तेरे नबी का

अल्लाह इस से पहले ईमां पे मौत दे दे
नुक़सान मेरे सबब से हो सुन्नते नबी का

कुछ नेकियाँ कमा ले जल्द आखिरत बना ले
कोई नहीं भरोसा ऐ भाई ज़िंदगी का

मीज़ां पे सब खड़े हैं आमाल तुल रहे हैं
रख लो भरम खुदारा अत्तार क़ादरी का

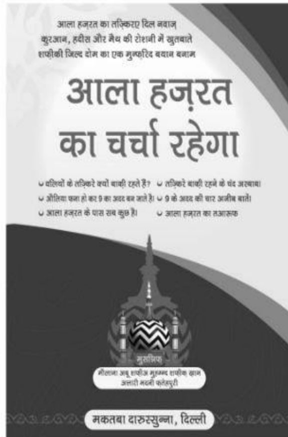
**अमीरे अहले सुन्नत**



**शायर :वसीम बेखुद माण्डलवी राजस्थान**

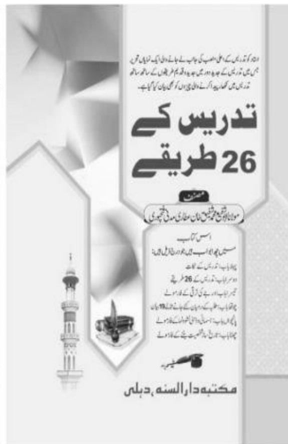
पढ़ कर के देखें दीं की हकीकत किताब में
लिखी है कैसी कैसी हिदायत किताब में
अख्लाक में भी आएगी उल्फत की बू तुझे
पढ़ ले अगर नज़र से मुहब्बत किताब में
चुन चुन के फूल लाए हैं उम्मत के वास्ते
कुरआं हदीस की है इबारत किताब में
जो ढूँढता है राहते क़ल्बो जिगर सुनो
मिल जाएगी उसे भी सुकूनत किताब में
तालीम का वो नूर ज़हानत की रौशनी
मौजूद है वो सारी ही हिकमत किताब में
तुमको तो सिर्फ पढ़ने की फुर्सत भी है कहां
लगती है कितनी खून की मेहनत किताब में
**बेखुद** हर एक नुकते को आसान कर दिया
**हज़रत शफीक** की है येह खिदमत किताब में


चाँद
की गवाही
आला हज़रत और इल्मे तक़्वीम
मौलाना अबू शफ़ीअ
मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी


आला हज़रत का तज़्किरए दिल नवाज़
क़ुरआन, हदीस और मैथ की रोशनी में ख़ुतबाते शफ़ीकी जिल्द दोम का एक मुन्फ़रिद बयान बनाम
आला हज़रत
का चर्चा रहेगा
मकतबा दारुस्सुन्ना, दिल्ली


आम मुसलमान के लिए नमाज़ और उस के ज़रूरी अहकाम सीखने के लिए बेहतरीन किताब बनाम
आसान
हनफ़ी नमाज़
मुरत्तिब
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी
आप इस किताब में पढ़ सकेंगे
मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

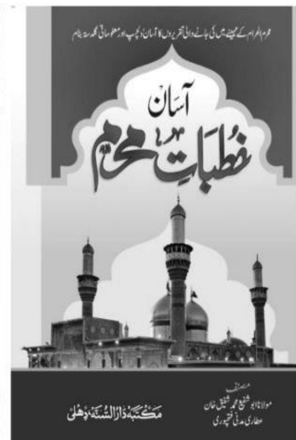

رَفِیقُ التَّدرِیس
پہلا باب: 63 انوکھی معلومات
دوسرا باب: 63 انوکھے سوالات
تیسرا باب: 63 انوکھے چٹکلے
چوتھا باب: 63 انوکھی پہیلیاں
پانچواں باب: 63 انوکھی حکمتیں
چھٹا باب: 63 انوکھی حکایات
مکتبہ دارالسنہ دہلی


تدریس کے
26 طریقے
مکتبہ دارالسنہ دہلی


कई लड़कियां पैदा होने के बाद लोग कहते हैं "इस औरत को तलाक़ दे दो" आख़िर लड़कियों की पैदाइश में
क़ुसूर किस का
मर्द का या औरत का
इस्लाम और साइंस की रोशनी में
आप इस किताब में पढ़ सकेंगे
मुरत्तिब
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी
मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली


خطباتِ مصطفائی
و
خطباتِ شفیقی


آسان فرض علوم
مکتبہ دارالسنہ دہلی


آسان
خطباتِ محرم
مکتبۂ دارالسنہ دہلی


آسان فرض علوم
تنظیمی
نصاب و بیانات
رفیق التدریس
القول الأظهر
شرح
الفقه الأكبر
خطبات مصطفائی
و
خطبات شفیق
क़ुसूर किस का
आँखों का तारा
नामे मुहम्मद
आसान
हनफ़ी नमाज़
تدریس کے
26 طریقے



